“ललितपुर जनपद में संचालित “जल जीवन मिशन” योजना के अंतर्गत “हर घर नल-हर घर जल” परियोजना के प्रभाव का सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत प्रतिवेदन”

सर्वेक्षक संस्था

समाज कार्य विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0)

सर्वेक्षक

डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग एवं मुख्य सर्वेक्षक (परियोजना)

एवं

गठित टीम (सर्वेक्षक एवं शोध छात्र)
डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(सन् 2024)

विषय–सूची

क्रम	ग्राम पंचायत, वि0ख0 एवं जनपद	पृष्ठ संख्या
1.	ग्राम पंचायत रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर	1–14
2.	ग्राम पंचायत बदनपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर	15–26
3.	ग्राम पंचायत पिपरट, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर	27–40
4.	ग्राम पंचायत बम्हौरी, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर	41–53
5.	ग्राम पंचायत कचनौदा, विकास खण्ड विरधा, जनपद ललितपुर	54–63
6.	ग्राम पंचायत गुगरवारा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर	64–74
7.	ग्राम पंचायत कल्याणपुरा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर	75–84
8.	ग्राम पंचायत गदयाना, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर	85–96
9.	ग्राम पंचायत इकलगुवाँ, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर	97–110
10.	ग्राम पंचायत थनवारा, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर	111–122

ग्राम पंचायत रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर

प्रापक–

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन,

नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग,

किसान बाजार, विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ।

प्रेषक–

विभागाध्यक्ष,

समाज कार्य विभाग,

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी।

विषय– *''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत सात जनपदों के प्रत्येक जनपद में चयनित 10 ग्रामों के ग्रामवार प्रभाव आकलन का प्रतिवेदन।*

1.0 विषय परिचय

''जल जीवन मिशन'' माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना है। यह परियोजना अगस्त 2019 में सर्वप्रथम गोवा से लागू की गई। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 2019 से 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है। इस योजना द्वारा भारत के प्रत्येक ग्रामीण परिवार में स्वच्छ जल की पहुंच सुनिश्चित

करने हेतु नल का कनेक्शन दिये जाने तथा उस नल से प्रत्येक परिवार के प्रति सदस्य को 55 लीटर जल देने की योजना सुनिश्चित करने की परिकल्पना की गई है जिससे कि ग्रामीण जीवन स्तर उन्नत, निःरोग एवं सुखद हो सके।

2.0 साहित्य आकलन एवं अवलोकन

प्रत्येक राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य स्तर बेहतर हो जिससे कि कुशल और स्वस्थ मानव संसाधन का निर्माण किया जा सके। स्वस्थ मानव संसाधन के निर्माण में संतुलित आहार एवं स्वच्छ जल की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इसलिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्मिलित है, की कल्पना शुद्ध पेयजल के अभाव में नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–21 के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है। इसमें शुद्ध पेयजल का अधिकार भी निहित है। सरकार का दायित्त्व है कि वह वंचित ग्रामीण आबादी तक शुद्ध पेयजल की उपलब्ध्धता सुनिश्चित करे, ताकि उनके जीवन स्तर में परिवर्तनकारी बदलावों को प्रेरित किया जा सके। यदि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र की बात की जाये, तो यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही जल संकट का सामना करता रहा है। यहां पर औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। यहां अधिकांश वर्षा दक्षिण–पश्चिम मानसून द्वारा जुलाई से सितंबर माह के मध्य होती है। पहाड़ी और पठारी क्षेत्र होने के कारण भूजल स्तर बहुत नीचे है। जल संकट ने यहां के जीवन को दुष्कर बनाया हुआ है। पर्याप्त और शुद्ध जल की कमी ने यहां के लोगों के समक्ष गंभीर

जल संकट उत्पन्न किया है जिसका समाधान नितांत आवश्यक है। इसके समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा 'हर घल नल–हर घर जल'' योजना संचालित की जा रही है, ताकि जल संकट के समाधान के साथ–साथ आरोग्य की प्राप्ति एवं बहु–आयामी लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

3.0 प्रभाव आकलन का उद्देश्य

1. जल जीवन मिशन के अंतर्गत ललितपुर जनपद के विकास खण्ड तालबेहट में अवस्थित ग्राम रामपुर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव का आकलन।
2. योजना क्रियान्वयन द्वारा ग्राम रामपुर में निवासित ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव की स्थिति का अध्ययन।

4.0 प्रभाव आकलन की उपकल्पना

1. राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ग्राम रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में कृत कार्य ''हर घर नल–हर घर जल'' से लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है
2. स्वास्थ्य के स्तर में सुधार हुआ है।
3. परियोजना के संचालन से ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में बदलाव हुआ है।

4. परियोजना के संचालन से सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

5.0 अध्ययन की प्रणाली एवं उपकरण

अध्ययन के प्रयोग हेतु शोध की निम्न तकनीकि एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोकन
2. सहभागी मूल्यांकन

ग्राम रामपुर में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम का लोगों के जीवन–स्तर पर प्रभाव को जानने के लिए अवलोकन एवं सहभागी

मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत रामपुर गांव की

कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाता, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली आदि के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। रामपुर गांव के संदर्भ में समग्र जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान सुमन देवी कुशवाहा से वार्ता किया गया। इसके साथ ही ग्राम रामपुर की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में अन्य तथ्यों को प्राप्त करने के लिए हितधारकों जैसे– वार्ड मेंबर, बी.डी.सी., आँगनबाड़ी, प्राथमिक एवं जूनियर हाई–स्कूल के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और रामपुर गांव के अन्य प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम रामपुर में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक जूनियर हाई–स्कूल संचालित हैं जिसमें कुल नामांकन क्रमश 180 एवं 115 है। प्रधानाध्यापक से चर्चा एवं विद्यालय के अवलोकन से पता चला कि उक्त दोनों विद्यालयों में जल संयोजन से शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति हो रही है। अवलोकन में विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं को समुचित मात्रा में पाया गया। शिशुओं एवं माताओं के टीकाकरण एवं पोषाहार व स्वास्थ्य के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं आशा से जानकारी प्राप्त की गई। अवलोकन एवं हितधारकों से हुई चर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी से स्पष्ट है कि रामपुर गांव की 75 प्रतिशत जमीन उपजाऊ एवं कृषि योग्य तथा 25 प्रतिशत जमीन पठारी/पहाड़ी है। गांव के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां हैं। रामपुर गांव की कुल आबादी–2317 एवं कुल मतदाताओं की संख्या–1033 तथा मनरेगा जॉब कार्डों की संख्या–835 है। न्यादर्श एवं

हितधारकों से चर्चा करने पर पता चला कि रामपुर गांव में कुल परिवारों की संख्या–426 एवं नल संयोजनों की संख्या भी 426 है। इस प्रकार रामपुर गांव का प्रत्येक परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से आच्छादित है। रामपुर गांव में दिसंबर 2022 से ही नियमित रूप से शुद्ध एवं पर्याप्त पेय जलापूर्ति हो रही है।

6.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर की कुल आबादी लगभग 2317 है जिसमें लगभग 275 घर अन्य पिछड़ा वर्ग के अंतर्गत कुशवाहा जाति जो कि सर्वाधिक है, उसके बाद घटते क्रम में लगभग 116 घर सामान्य वर्ग तथा 35 घर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों का है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव रामपुर गांव से किया गया। प्रत्येक जातीय प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 2317/10 = 231 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में रामपुर के प्रधान सुमन देवी कुशवाहा एवं अन्य पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर ग्राम रामपुर के संदर्भ में चर्चा की गई। ग्राम रामपुर में शासन द्वारा संचालित प्राथमिक एवं जूनियर

हाई–स्कूल के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया और योजना के बारे में रामपुर गांव एवं शैक्षिक में क्षेत्र में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। रामपुर गांव के आंगनबाड़ी केन्द्र की संचालिका को भी सहभागी मूल्यांकन में सम्मिलित करके अपेक्षित जानकारी प्राप्त की गई। गांव में नियुक्त सफाई कर्मी से संपर्क ना हो पाने के कारण अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया।

7.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम रामपुर विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु रामपुर ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

8.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में रामपुर ग्राम से इतर व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उसे भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित होने से वंचित रखा गया है।

9.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का वस्तुनिष्ठ, तथ्यात्मक एवं पक्षपात रहित अध्ययन किया गया है। जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम अग्रलिखित है–

9.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श रूप में कुल 231 लोगों को सम्मिलित किया गया है जिसमें सम्मिलित महिलाओं की संख्या–116 है। अध्ययन में सम्मिलित यह महिलायें

रामपुर गांव के विभिन्न जातीय, आयु तथा शैक्षिक स्तर से संबंधित महिलाओं का प्रतिनिधित्त्व करती हैं। न्यादर्श रूप में सम्मिलित इन महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में बात करने

पर 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि उनके जीवन स्तर में सुधार आया है, उनका कार्य बोझ कम हुआ है, बीमारियों में कमी आयी है, कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि हुई है, समय की बचत हुई है जिससे वह अधिक समय बच्चों के पालन–पोषण, कृषि व पशुपालन, हस्तशिल्प आदि में दे पा रही हैं। अध्ययनकर्ता द्वारा रामपुर गांव की महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि महिलाओं में ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है, स्वच्छता में सुधार हुआ है, प्रत्येक घर में शौचालय और पर्याप्त जलापूर्ति होने से महिलाओं को सम्मान और गरिमापूर्ण जीवन जीने का अवसर प्राप्त हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित 93 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पहले पेट दर्द जैसी समस्यायें अधिक होती थी जिसमें ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के अंतर्गत शुद्ध पेयजल की आपूर्ति होने से सुधार आया है। अध्ययनकर्ता द्वारा रामपुर गांव की महिलाओं में समग्र परिवर्तन देखा गया, उनमें आत्मविश्वास एवं स्वावलंबन की भावना देखी गई, पारिवारिक तनाव में कमी देखी गई और इस प्रकार उनमें खुशहाल जीवन की झलक देखी जा सकती है।

9.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने रामपुर गांव के शैक्षिक परिवेश में भी सुधार किया है। अभिभावक विशेषकर महिलायें, जल संकट के समाधान होने से, बचने वाले अधिक समय का उपयोग बच्चों की शिक्षा–दीक्षा पर भी कर रही हैं। वह बच्चों के भविष्य को लेकर सजग हो गयी हैं। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारियां कम होने से बच्चों का मन भी पढ़ाई–लिखाई पर पूर्व की अपेक्षा अधिक लग रहा है। 96

प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि पूर्व में जल संचयन हेतु बच्चों का उपयोग अधिक किया जाता था। चूंकि अब ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से जल संकट का समाधान हो गया है, इसलिए बच्चों के पास समय भी अधिक बच रहा है जिसका उपयोग वह अपनी शिक्षा पर कर रहे हैं। ग्राम रामपुर में एक प्राथमिक विद्यालय और एक जूनियर हाई–स्कूल शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसे ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया गया है। परिणामस्वरूप उक्त विद्यालयों में स्वच्छता एवं सुरक्षा संबंधी चुनौतियां समाप्त हो गई हैं जिससे छात्र/छात्राओं के नामांकन और नियमित उपस्थिति में वृद्धि देखी गई है। विद्यालय के शैक्षिक परिवेश में सकारात्मक बदलाव आया है। अभिभावक भी अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने को लेकर उत्साहित हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यपक संजीव त्रिपाठी के अनुसार– ''विद्यालय में अवसंरचनात्मक सुविधायें उपलब्ध होने से विद्यार्थियों को लगभग वह सभी सुविधायें प्राप्त हो रही हैं, जो पहले केवल निजी विद्यालयों में मिलती थी''। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि विद्यालय में शैक्षिक परिवेश उत्तम है और शिक्षकों द्वारा पूर्ण मनोयोग से कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। साथ ही रामपुर गांव के लोगों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। इस प्रकार से रामपुर गांव में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने शैक्षिक क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सुधार किया है।

9.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''स्वास्थ्य ही सम्पत्ति है'' यह कथन उतना ही सत्य है जितना कि जीवन के लिए वायु। इसीलिए ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी उद्देश्य के रूप

में एक उद्देश्य ग्रामीण स्वास्थ्य में सुधार लाना भी है। न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 231 उत्तरदाताओं में से 98 प्रतिशत ने बताया कि उन्हें ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने सुखमय और बीमारी मुक्त जीवन प्रदान किया है। अध्ययन में सम्मिलित

100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बीमारियों पर खर्च कम होने से धन बचत में वृद्धि हुई है। ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा प्रत्येक परिवार संतृप्त हो जाने से गांव के लोगों को खुले में शौच से मुक्ति मिल गई है क्योंकि अब प्रत्येक घर में पर्याप्त जल की उपलब्धता है जिसका उपयोग वह अपने दैनिक कार्यों के साथ ही शौचालयों में भी कर रहे हैं। आंगनबाड़ी कार्यककर्ती से चर्चा करने पर पता चला कि अपेक्षाकृत बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आया है और उनका विकास उचित रूप से हो रहा है। पहले बच्चों में शरीरिक और मानसिक विकृतियां अधिक देखी जाती थी, जिसमें अब कमी आयी है। जल

जनित बीमारियां कम होने से समग्र रूप में रामपुर गांव के सभी लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पता चला कि लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। महिलाओं, बच्चों और वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में अत्यधिक कमी देखी गई है। युवाओं और प्रौढ़ों में भी आत्मविश्वास बढ़ा है। जल जनित एवं उससे उत्पन्न अन्य बीमारियों में कमी आने से इजाल हेतु कर्ज लेने जैसी समस्याओं में कमी आयी है। कुल मिलाकर रामपुर गांव खुशहाली एवं सुखद जीवन की ओर अग्रसर है। लोगों में उक्त योजना के प्रति संतुष्टि का भाव है।

9.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

एक ऐसा वर्ग जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पूर्व शुद्ध पेयजल से वंचित था, उसे वर्णित महत्त्वाकांक्षी परियोजना ने शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल से संतृप्त कर दिया है। वर्णित योजनांतर्गत रामपुर के लोगों को नियमित पेयजल की आपूर्ति हो रही है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि रामपुर गांव में शुद्ध पेयजल की पहुंच संबंधी भेद–भाव समाप्त हो चुका है। गांव में सहकारिता की भावना आयी है, लोगों के दृष्किोण में सकारात्मक परिवर्तन आया है, जीवन स्तर में सुधार आया है, बीमारी के लिए कर्ज जैसी समस्या का बोझ कम हुआ है जिससे आर्थिक स्थिति में भी सुधार आया है। इस प्रकार मूल्यों में परिवर्तन आने से परम्परागत तीज–त्यौहारों और शादी–विवाह जैसे उत्सवों में भी सकारात्मक परिवर्तन देखे जा सकते हैं। अवलोकन से स्पष्ट है कि रामपुर गांव में समग्र परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। यह परिवर्तन भौतिक संस्कृति और और अभौतिक संस्कृति दोनों में आया है।

9.5 रोजगार के अवसर

रामपुर गांव का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां हैं। कुछ लोग जीवकोपार्जन हेतु शहरो में पलायन कर गये हैं और कुछ लोग गांव में ही और आस–पास

के क्षेत्रों में स्वरोजगार एवं दिहाड़ी–मजदूरी करते हैं। कुछ लोग ग्राम पंचायत द्वारा काम दिये जाने पर मनरेगाा के अंतर्गत भी कार्य करते हैं। अधिकांश महिलायें कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियों में संलग्न हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बीमारी की समस्या कम होने, जल संकट की कमी दूर होने और स्वास्थ्य स्तर में वृद्धि होने से रोजगार प्रेरित पलायन में कमी आयी है। युवाओं में अब गांव के प्रति सकारात्मक धारणा उत्पन्न हुई है। जल संकट की समाप्ति से जल संचयन में लगने वाले समय की बचत होने से महिलायें रोजगार की ओर उन्मुख हो रही हैं। ग्राम रोजगार सेवक के अनुसार मनरेगा में कार्य की मांग में वृद्धि हुई है। अवलोकन से स्पष्ट है कि पहले रामपुर गांव

के लोग स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण अपने काम–धन्धों पर अधिक समय नहीं दे पाते थे, लेकिन अब वह अधिक समय दे रहे हैं। युवाओं में उत्साह देखा गया है। रामपुर ग्राम में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं जिससे लोगों में आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है। अतएव यह कहा जा सकता है कि रामपुर गांव समृद्धि की ओर अग्रसर है।

निष्कर्षतः ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने की संकल्पना को संबोधित है, उसकी प्राप्ति प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, से प्राप्त परिणाम सुनिश्चित करते हैं। शासन द्वारा संचालित और वित्तीय रूप से पोषित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा ग्राम रामपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में कृत कार्य के प्रति रामपुर के लोग पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। गांव की मूलभूत समस्या वर्णित योजना के प्रभावी संचालन से समाप्त हो जाने के कारण लोगों में खुशहाली है। गांव के लोग सकारात्मक बदलाव अनुभव कर रहे हैं। महिलायें सशक्त, स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर हुई हैं।

ग्राम पंचायत बदनपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर

ग्राम सभा बदनपुर विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा कृत कार्य का लोगों के जीवन स्तर पर प्रभाव का आकलन करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन संपन्न किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के

अंतर्गत बदनपुर गांव की कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाता, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में संचालित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली, बदनपुर गांव के लोगों की जीवनचर्या आदि के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। बदनपुर गांव के संदर्भ में समग्र जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम

ग्राम प्रधान सुमन देवी कुशवाहा से वार्ता की गयी। इसके साथ ही ग्राम की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अन्य तथ्यों को प्राप्त करने के लिए हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, बी.डी.सी, प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और बदनपुर गांव के अन्य प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम बदनपुर में एक प्राथमिक विद्यालय अवस्थित है जिसमें कुल नामांकन संख्या–64 है। प्रधानाध्यापक बृजेन्द्र कुमार से चर्चा एवं विद्यालय के अवलोकन से पता चला कि विद्यालय में नल संयोजन से शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति हो रही है। गांव में कोई–भी आंगनवाड़ी और स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है। अवलोकन एवं हितधारकों से हुई चर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी से स्पष्ट है कि बदनपुर गांव की 75 प्रतिशत जमीन उपजाऊ एवं कृषि योग्य तथा 25 प्रतिशत जमीन पठारी/पहाड़ी है। गांव के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां हैं, यद्यपि कि कृषि उन्नत अवस्था में नहीं है जिससे लोगों में पिछड़ापन है। बदनपुर गांव की कुल आबादी–650 एवं कुल मतदाताओं की संख्या–375 है। न्यादर्श एवं हितधारकों से चर्चा करने पर पता चला कि बदनपुर गांव में कुल नल संयोजनों की संख्या–59 है। इस प्रकार बदनपुर गांव का प्रत्येक परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से आच्छादित है एवं गांव में नियमित रूप से शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की आपूर्ति हो रही है। बदनपुर गांव के लोगों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उन्नत ना होने के कारण गांव में अत्यंत पिछड़ापन है।

नोट :– *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

बदनपुर गांव में ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु अध्ययन के लिए समग्र का निर्माण केवल नल संयोजन से संतृप्त परिवार के लोग करते हैं। न्यादर्श की इकाइयों का चयन समग्र से ही किया गया है। ग्राम बदनपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर की कुल आबादी लगभग 375 है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चयन बदनपुर गांव से किया गया। प्रत्येक जातीय प्रस्तर से 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 375/10 = 38 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके, उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में बदनपुर के प्रधान सुमन देवी कुशवाहा एवं अन्य पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर चर्चा की गई। ग्राम बदनपुर में शासन द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में हितधारक के रूप में सम्मिलित किया गया और योजना के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा पर आये बदलाव को जानने का प्रयास किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात्

उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संबंध में गुणात्मक आंकड़ों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम बदनपुर विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु बदनपुर ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में बदनपुर ग्राम से इतर व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जिन परिवारों के व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उसे भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। हितधारकों के रूप में केवल गांव से संबद्ध लोगों को ही सम्मिलित किया गया है ताकि विश्वसनीय जानकारी सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त हो सके।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम बदनपुर, विकास खण्ड तालबेहट, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक,

आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का वस्तुनिष्ठ, तथ्यात्मक एवं पक्षपात रहित अध्ययन किया गया है। जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम अग्रलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव मूल्यांकन हेतु न्यादर्श रूप में कुल 38 लोगों जिसमें स्त्री एवं पुरूष समानुपात में हैं को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में कुल 19 (50 प्रतिशत) महिलाओं को सम्मिलित किया गया है, जो बदनपुर

गांव के विभिन्न जातीय, आयु तथा शैक्षिक स्तर से संबंधित महिलाओं का प्रतिनिधित्त्व करती हैं। न्यादर्श रूप में सम्मिलित इन महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर स्पष्ट हुआ कि बदनपुर गांव की 95 प्रतिशत महिलायें ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से

अत्यधिक संतुष्ट हैं। 96 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनके जीवन स्तर में उत्तरोत्तर सुधार आया है। 98 प्रतिशत ने कहा कि पेट संबंधी बीमारी कम होने से धन की बचत हुई है। ग्राम प्रधान सुमन देवी कुशवाहा के अनुसार– ''नियमित एवं शुद्ध जलापूर्ति से गांव की महिलाओं के समय में बचत हुई है''। अवलोकन से पता चला कि महिलाओं में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। 99 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वह पूर्व की अपेक्षा अपने परिवार एवं बच्चों को अधिक समय दे पा रही हैं। स्वास्थ्य स्तर में सुधार और समय व धन बचत से महिलाओं का रूझान कृषि एवं पशुपालन की ओर बढ़ा है। गांव की महिलायें बचे समय का उपयोग सिलाई–कढ़ाई आदि कार्यों को करके धनार्जन कर रही हैं। अध्ययनकर्ता द्वारा बदनपुर गांव की महिलाओं के जीवन स्तर में महत्त्वपूर्ण बदलावों को रेखांकित किया गया। जल उपलब्धता के कारण इज्जत घर कार्यात्मक पाये गये जिसका नियमित उपयोग महिलायें कर रही हैं। यह महिला सम्मान और सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है, जो महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को उच्च करता है। न्यादर्श में सम्मिलित महिलाओं ने बताया कि पहले दूषित जल पीने से होने वाली पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। परिवार में महिलाओं का सम्मान बढ़ा है। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने महिलाओं के समग्र विकास को प्रोत्साहित करके सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति को संबोधित करता है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने बदनपुर गांव में शिक्षा के क्षेत्र में आमूल–चूल बदलाव किया है। महिलायें बच्चों की शिक्षा

पर अधिक ध्यान दे रही हैं। बच्चों को समय से तैयार करके नियमित विद्यालय भेजा जा रहा है। 98 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बीमारियों पर खर्च होने वाले धन की बचत से बच्चों की फीस और कापी–किताब पर पर्याप्त रूप से खर्च किया जा रहा है। गांव में स्थापित प्राथमिक विद्यालय में शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति होने से छात्र/छात्राओं के नामांकन संख्या में वृद्धि देखी गयी है। बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्तर में सुधार होने से वह विषय को अधिक अच्छे से समझ पा रहे हैं। विद्यालय मे ंपर्याप्त जलापूर्ति होने से शौचालय की सुविधा विद्यार्थियों को मिल रही है। विद्यालय में जल संकट के समाधान और पर्याप्त जल की पहुंच सुनिश्चित होने से शैक्षिक परिवेश में व्यापक बदलाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। विद्यालय में बच्चे रचनात्मक कार्यों में भाग ले रहे हैं। बालिकाओं की शिक्षा में भी सुधार बदनपुर गांव में देखा गया है। बदनपुर गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। 95 उत्तरदाताओं ने बताया कि अब कोई–भी बच्चा गांव में ऐसा नहीं है, जो कि नियमित विद्यालय नहीं जाता हो। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बदनपुर गांव की शिक्षा में संरचनात्मक सुधार करके भविष्य के लिए शिक्षित एवं जागरूक पीढ़ियों को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता दिख रहा है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सतत विकास लक्ष्य–3 को भी संबोधित किया है जिसमें स्वस्थ जीवन एवं आरोग्य की दिशा में वैश्विक स्तर पर प्रयास करने की बात स्वीकार की गई है। इसीलिए ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी

उद्देश्य के रूप में एक उद्देश्य ग्रामीण स्वास्थ्य को उन्नत करना भी है। बदनपुर गांव के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना ने उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार किया है। अब पेट संबंधी बीमारियों से बहुत हद तक निजात मिल चुका है। स्वच्छता में सुधार हुआ है और पर्याप्त जल तक पहुंच होने से नियमित रूप से बच्चे स्नान कर रहे हैं और शुद्ध जल भी पी रहे हैं। नियमित स्नान से चर्म रोगों में भी सुधार देखा गया है। वहीं शुद्ध जल पीने से पेट संबंधी बीमारियों में कमी देखी गयी है।

शुद्ध पेयजल ने महिलाओं, बच्चों, वृद्धों तथा युवाओं आादि में स्वास्थ्य स्तर को उन्नत किया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पेट के साथ ही कई अन्य बीमारियों से भी निजात मिला है। अवलोकन से पता चला कि महिलायें योजना के प्रति बहुत आशान्वित थी। उनमें एक विशेष प्रकार की संतुष्टि देखी गई। गांव बदनपुर के लोगों के शारीरिक और मानसिक स्तर में सुधार परिलक्षित हो रहा है। सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े पुष्टि करते हैं कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना के अंतर्गत कृत

कार्य बदनपुर गांव के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में उत्तरोत्तर सुधार किया है और ग्रामीण जीवन को खुशहाल एवं समृद्ध बनाया है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 94 प्रतिशत लोगों ने बताया कि पूर्व में केवल गांव के कुछ लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित थी, जिसके कारण निम्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच से वंचित थे, क्योंकि

वह शुद्ध पेयजल में आने वाले खर्च को वहन नहीं कर सकते थे। इस कारण से गांव बदनपुर में भेद–भाव भी देखा जाता था। ''हर घर नल–हर घर जल'' ने बदनपुर गांव के सभी लोगों तक शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करके सामाजिक भेद–भाव की खाई को समाप्त करने एवं लोगों के रहन–सहन के स्तर को उच्च करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ''हर घर नल–हर घर जल'' के अंतर्गत कृत कार्य से

बदनपुर गांव में सामाजिक मूल्यों में बदलाव देखा गया है, साथ ही लोगों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन आया है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बाहर के लोग अब मेरे गांव में अपनी लड़की का विवाह करना पसंद कर रहे हैं, लोगों की नजर में गांव की छवि अच्छी हुई है। लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार आने से सामाजिक समारोहों में अधिक धन खर्च किया जा रहा है। कुल मिलाकर बदनपुर के ग्रामीण जीवन का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लोगों के जीवन स्तर में सुधार आने के साथ ही सोच में भी परिवर्तन आया है, जो सांस्कृतिक गतिशीलता को संबोधित है। गौरतलब है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' ने बदनपुर गांव के विकास को प्रोत्साहित किया है।

4.5 रोजगार के अवसर

बदनपुर गांव का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां हैं, यद्यपि कि गांव में उपजाऊ जमीन का अभाव है। गांव के कुछ लोग सब्जी उत्पादन का कार्य करके उसे पास के बाजार में बेचकर धनार्जन करते हैं। वहीं कुछ लोग जीवकोपार्जन हेतु महानगरों में पलायन कर चुके हैं और कुछ लोग गांव में ही स्वरोजगार कर रहे हैं। गांव में अपेक्षाकृत गेहूं का उत्पादन अधिक होता है जबकि जल की कमी के कारण धान का उत्पादन प्रभावित होता है। जिन लोगों का जॉब कार्ड बना है, वह मनरेगा में भी काम उपलब्ध होने पर करते हैं। बदनपुर गांव के 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारी कम होने से स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है जिससे वह कृषि एवं संबद्ध व्यवसाय पर अधिक समय दे रहे हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 99 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि की है जिससे उनका कार्य

प्रदर्शन बेहतर हुआ है। जल संकट की कमी से युवाओं के पलायन में कमी आयी है। स्वरोजगार के क्षेत्र में युवाओं का रूझान देखा गया है। समय एवं धन बचत से महिलायें रोजगारोन्मुख व्यवसाय की ओर स्वयं को आजमा रही हैं। गौरतलब है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के विकल्प बढ़ने के कारण युवाओं में आत्मविश्वास में वृद्धि एवं पलायन की दर में कमी आयी है। युवाओं द्वारा गांव में ही रहकर रोजगार के बेहतर विकल्पों की तलाश की जा रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्णित योजना ने आर्थिक क्षेत्र में भी बदलाव को संबोधित करके समग्र परिवर्तन लाने का प्रयास किया है।

इस प्रकार ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने की संकल्पना से संबद्ध है, उसकी प्राप्ति प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, से प्राप्त परिणाम सुनिश्चित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में गांव बदनपुर में समग्र परिवर्तन को सहभागी मूल्यांकन के आधार पर रेखांकित किया गया। बदनपुर में जल संकट समाप्त हो जाने से व्यापक स्तर पर सकारात्मक बदलाव देखे गये। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित और पोषित ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा कृत कार्य के प्रति गांव के सभी वर्ग के लोगों में संतुष्टि पायी गई। योजना ने ग्रामीण संतुष्टि और स्वावलंबन, सहयोग तथा सहकार एवं आत्मनिर्भरता में वृद्धि की है। वर्णित योजना ने सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य स्तर को उन्नत करके बदनपुर गांव

के समग्र विकास को संबल दिया है। इस योजना ने बदनपुर गांव के प्रत्येक वर्ग एवं आयु के लोगों में सकारात्मक परिवर्तन को संबोधित किया है।

ग्राम पंचायत पिपरट, विकास खण्ड मडावरा, जनपद ललितपुर

ललितपुर जनपद के मड़ावरा विकास खण्ड के अंतर्गत ग्राम पिपरट में संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' जैसी महत्त्वाकांक्षी परियोजना के प्रभाव को लोगों के जीवन स्तर पर देखने के लिए अवलोकन एवं सहभागी

मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन किया गया है। सर्वप्रथम अध्ययन हेतु पिपरट गांव की कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपस्थिति, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। गांव पिपरट के संदर्भ

में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान से संपर्क स्थापित करके चर्चा किया गया एवं पिपरट ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित तथ्यों को प्राप्त किया गया। पिपरट गांव के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और पिपरट गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम पिपरट में कुल दो विद्यालय संचालित हैं जिसमें एक प्राथमिक विद्यालय और एक जूनियर हाई–स्कूल है। जूनियर हाई–स्कूल में सकल नामांकन 65 है। दोनों विद्यालय पूर्ण रूप से नल संयोजन से संतृप्त हैं जिसके कारण नियमित रूप से पेयजल की आपूर्ति विद्यालय में होने से बच्चों को स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति हो रही है। गांव में महिला स्वयं सहायता समूह का संचालन हो रहा है जिसकी सदस्यायें नियमित रूप से लेन–देन एवं बैठकें आयोजित कर रही हैं। पिपरट गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र भी है जिसकी संचालिका श्रीमती गीता देवी हैं। गांव में स्वाथ्य केन्द्र का अभाव है जिससे लोगों को बीमारियों के इलाज हेतु समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

ग्राम पंचायत पिपरट की कुल आबादी 1000 है एवं मतदाताओं की संख्या–600 है। कुल परिवारों की संख्या–180 है जिसके सापेक्ष केवल 153 नल कनेक्शन ही उपलब्ध हैं। यद्यपि नल कनेक्शन से वंचित परिवारों को भी योजना से आच्छादित करने का प्रयास मिशन स्तर पर किया जा रहा है। गांव की लगभग 80 प्रतिशत भूमि उपजाऊ है और शेष अनुपजाऊ। उपजाऊ भूमि का प्रतिशत अधिक होने के कारण प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत कृषि एवं सम्बद्ध क्रियायें गांव की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। ग्राम पंचायत

पिपरट में बहुसंख्यक आबादी अन्य पिछड़ा वर्ग, उसके बाद अनुसूचित जाति एवं सबसे कम सामान्य वर्ग की आबादी निवासित है। जिन परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया गया है उनमें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है।

नोट :– *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषयानुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम पिपरट की कुल आबादी लगभग 1000 है। स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव पिपरट गांव से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 1000/10 = 100 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50 : 50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में ग्राम पंचायत पिपरट के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर ग्राम पिपरट के संदर्भ में चर्चा की गई। ग्राम पिपरट में संचालित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव

से गांव एवं शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों का आकलन किया गया। पिपरट गांव में संचालित आंगनबाड़ी एवं स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मियों को भी हितग्राहियों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से भी चर्चा करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा किया गया।

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 100 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 50 पुरूष और 50 महिलायें हैं। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया है कि कोई भी ऐसी इकाई चयनित ना हो, जो नल संयोजन से वंचित हो। इसके अतिरिक्त गांव कि हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को भी अध्ययन में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत पिपरट विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु पिपरट ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (100 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में पिपरट ग्राम से संबंध ना रखने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उन्हें भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित होने से वंचित किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम पिपरट, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का निष्पक्षता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम अग्रलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

न्यादर्श में सम्मिलित कुल 50 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। अध्ययन में 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि योजनांतर्गत प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल सुनिश्चित होने से उनकी प्रस्थिति में गुणात्मक बदलाव आया है जिसकी पुष्टि स्वयं सहायता समूह एवं हितधारकों से हुई चर्चा से प्राप्त आंकड़े भी करते हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 92 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि पहले उन्हें दूर से पानी भरकर कई मटका कसेरी में सर पर

रखकर लाना पड़ता था जिसके कारण उनकी गर्दन में प्रायः दर्द रहता था। अवलोकन में गांव की अनेक महिलाओं में यह समस्या देखी गई। चूंकि अब ''हर घर नल–हर घर

जल'' योजना से प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है जिसके कारण एक बहुत बड़ी समस्या, जिससे मुख्य रूप से महिलायें और बच्चे प्रभावित थे, समाप्त हो गई है। 91 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि अब बीमारियां भी कम हुई हैं और इलाज पर आने वाले खर्च में भी कमी आयी है। अवलोकन में पाया गया कि महिलाओं के पास अब पर्याप्त समय बच रहा है जिसका उपयोग वह उत्पादक कार्यों में कर रही हैं। गांव में कृषि और पशुपालन में महिलाओं की भूमिका अधिक देखी गई। 95 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वह बच्चों की देख–भाल एवं पालन–पोषण पर अब अधिक

समय व्यय कर रही हैं। इस प्रकार परिवार को अधिक समय देने एवं समय व धन की बचत होने से महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन आया है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से महिलाओं की भूमिका को परिवार में स्वीकार किया गया है। स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से महिलाओं का शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक स्तर सुधरा है। इस प्रकार से यह कहना सर्वथा उचित होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को प्रेरित करते हुए जल संकट का भी निवारण किया है जिससे महिलाओं के गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार सुनिश्चित हुआ है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम पंचायत पिपरट में एक प्राथमिक विद्यालय और एक जूनियर हाई–स्कूल शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। गांव के अधिकांश बच्चे इन विद्यालयों में पढ़ने के लिए जाते हैं। चूंकि विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त कर दिया गया है, जिसके कारण मौलिक सुविधाओं की सुनिश्चितता विद्यालय में हुई है, जो बच्चों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने का कार्य कर रही है। 91 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि योजना संचालन के पूर्व अभिभावक, विशेषकर अपनी बच्चियों को विद्यालय भेजने से कतराते थे, क्योंकि शौचालय के अभाव में बच्चियों को खुले में बाहर शौच जाने हेतु विवश होने के कारण, उन्हें बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता था। विद्यालय के शिक्षकों से हुई वार्तानुसार पाया गया कि अब बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है, बीमारियों में कमी आयी है, अभिभावकों में भी जागरूकता देखी गयी

है, जिसके कारण विद्यालय में नामांकन दर और नियमित उपस्थिति में बढ़ोत्तरी हुई है।

अवलोकन और न्यादर्शों से प्राप्त आकड़ों के अनुसार घर पर भी बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान परिवार के सदस्यों द्वारा दिया जा रहा है। बीमारियों पर धन व्यय में कमी आने से धन का खर्च बच्चों की शिक्षा की ओर शिफ्ट हुआ है। स्वच्छ जल से बच्चों के स्वास्थ्य में भी सुधार आया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा पर देखा जा सकता है। जल संग्रह से बच्चों को मुक्ति मिल गई है जिससे बच्चे अपना समय नियमित विद्यालय जाने में कर रहे हैं।

अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सतत् विकास लक्ष्य–4 को भी प्राप्त करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। ग्राम पिपरट में योजना

के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में उत्साहजनक परिवर्तन आया है। लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है और वह शिक्षा के महत्त्व को समझ रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सफलतापूर्वक अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में ध्यान संकेन्द्रित किया है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

स्वास्थ्य का मुद्दा स्वच्छ जल से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। स्वच्छ जल के अभाव में उत्तम स्वास्थ्य की कल्पना करना असंभव है। जल जनित अनेक बीमारियां स्वास्थ्य स्तर को प्रभावित करके शारीरिक एवं मानसिक रूप से व्यक्ति को जर्जर बना देती हैं, जिसके कारण उसका विकास तो प्रभावित होता ही है, साथ ही प्रभावित होता है उस समाज व देश का विकास, उस देश में प्रति व्यक्ति आय और सकल घरेलू उत्पाद इत्यादि।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के साथ ही उत्तम स्वास्थ्य पर भी ध्यान केन्द्रित किया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। बीमारियों में कमी आने से धन एवं समय की बचत हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि योजना संचालन के पूर्व में पेचिस, दस्त, उल्टी एवं पीलिया जैसी समस्यायें प्रमुखता से देखी जाती थी। इन बीमारियों का प्रकोप वर्षा काल में अधिक बढ़ जाता था, क्योंकि उस समय जल अधिक दूषित हो जाता था। 90 प्रतिशत लोगों ने बताया कि पूर्व में बाल्टी में जल रख देने पर उसका रंग बदल जाता था और उस पानी को पीने का मन नहीं करता था और अब योजना लागू होने के बाद

स्वच्छ जल की सप्लाई होने से शुद्ध एव पर्याप्त पेयजल प्राप्त हो रहा है, अब पानी का रंग बदल नहीं रहा है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि स्वच्छ जल पीने से

उनके स्वास्थ्य स्तर में उन्नति हुई है। अवलोकन से पता चला कि लोगों कि कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि हुई है। उनमें योजना के प्रति संतोष देखा जा सकता है। पिपरट ग्राम

की जनता में योजना के प्रति खुशहाली है क्योंकि उनका मानना है कि सरकार ने उनकी बात को सुन लिया है और उसका समाधान भी प्रस्तुत कर दिया है। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बहु–आयामी छाप ग्राम पिपरट में छोड़ी है। गांव की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के शमन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

जल प्रकृति प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है जिसके अभाव में जीवन की कल्पना निरर्थक है। जिस प्रकार से व्यक्ति के जीवन में प्राण वायु का महत्त्व है, ठीक उसी प्रकार से जल का भी, क्योंकि इसके अभाव में जीवन की कल्पना कठिन है। पर्यावरण का निरंतर मानव द्वारा ह्रास करने के कारण भूजल दूषित होता रहा, जिसके कारण शुद्ध पेयजल तक लोगों की पहुंच दुर्लभ हो गयी। कुछ धनवान एवं सम्पन्न लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सिमट गयी, जिसके कारण एक वृहद आबादी स्वच्छ पेयजल से वंचित हो गयी, जिसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण ग्राम पिपरट में भी देखा गया। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि योजना लागू होने से पूर्व स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता गांव के कुछ धनाढ्य लोगों तक ही संकेन्द्रित हो गयी थी, जिसका शमन ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा प्रत्येक परिवार को नियमित शुद्ध जल की आपूर्ति सुनिश्चित करके किया गया। इस योजना ने गांव में समरसता का विकास किया है, जल जनित लड़ाई–झगड़ों को कम किया है और गांव में शांति का वातावरण सुनिश्चित किया है। लोगों की सोच में परिवर्तन आया है। सांस्थानिक मूल्यों में बदलाव एवं आधुनिक

मूल्यों के प्रचलन व आत्मसातीकरण ने लोगों के व्यवहार को परिवर्तित कर दिया है। अब सभी को अपने घर में ही नियमित स्वच्छ जल की आपूर्ति हो रही है। मांगलिक कार्यों में जल संकट संबंधी समस्याओं के संबंध में चिंता करने की जरूरत नहीं है। गांव की छवि में सुधार होने से शादी–विवाह जैसे सामाजिक धारणाओं में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। बाहरी लोगों द्वारा गांव में नये रिश्तों को बनाने में तरजीह दी जा रही है।

कुल मिलाकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक मूल्यों में बदलाव लाकर सामाजिक गतिशीलता को प्रेरित किया है। आधुनिक मूल्यों को स्वीकार करने में योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। समग्र परिवर्तन को संबोधित यह योजना ग्राम पिपरट में आशा से अधिक परिवर्तन लाने में समर्थ हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के क्षेत्र में भी नवीन आयाम स्थापित किये हैं। महिलायें रोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रयासरत हैं क्योंकि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य स्तर बेहतर हुआ है और समय एवं धन की बचत के कारण निर्मित पूंजी का प्रयोग वह स्वरोजगार के संसाधनों को खरीदने में कर रही हैं। जल संकट की समाप्ति से युवाओं का उत्साहवर्धन हुआ है। समग्र रूप से शारीरिक और मानसिक शौष्ठव में रूपांतरकारी परिवर्तन आने से लोगों की कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि हुई है। ग्राम पिपरट में अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। कुछ लोग स्वरोजगार एवं दिहाड़ी–मजदूरी करके

जीवन निर्वाह कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों के परिणामस्वरूप कृषि पैटर्न में बदलाव आया है। 93 प्रतिशत युवाओं ने स्वीकार किया कि अब उनका झुकाव कृषि कार्यों की ओर अधिक हुआ है। अब निर्वाह कृषि के स्थान पर बाजारोन्मुख एवं नकदी कृषि पर बल दिया जा रहा है ताकि लाभ अधिक हो सके। यद्यपि गांव में कृषि योग्य जमीन कम है, फिर भी इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन आ रहे हैं। चंद पैसों की आस में होने वाले पलायन को कम करने में भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की भूमिका काबिल–ए–तारीफ है। पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन में भी रोजगार पैदा हुआ है क्योंकि जल संकट के समाधान ने पशुपालन को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम पिपरट में आर्थिक संवृद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से लोगों के जीवन स्तर में सुधार देखा जा सकता है। अवलोकन से प्राप्त आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि वर्णित योजना ने गांव के लोगों की आय में वृद्धि करके खुशहाली को प्राख्यापित किया है।

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित और पोषित योजना जिस लक्ष्य को लेकर संचालित की गयी थी, उसकी पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते है। ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा ग्राम पिपरट, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में रूपांतरकारी बदलावों को महसूस किया गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण को वर्णित योजना द्वारा संबल प्राप्त हुआ है। ग्राम पिपरट के लोगों में योजना के अंतर्गत कृत कार्य

के प्रति उच्च स्तर की संतुष्टि देखी गई है। जल संकट के समाधान के साथ ही योजना द्वारा समग्र परिवर्तन लाने में महती भूमिका निभायी गयी है।

ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां, विकास खण्ड मडावरा, जनपद ललितपुर

प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य के प्रभाव को ग्राम बम्हौरी कलां, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर देखा गया है। इसके लिए अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन

विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रभाव आकलन हेतु सर्वप्रथम बम्हौरी कलां गांव की कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या,

आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। गांव बम्हौरी कलां के संदर्भ में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान से संपर्क स्थापित करके चर्चा किया गया एवं बम्हौरी कलां ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित तथ्यों को प्राप्त किया गया। बम्हौरी कलां गांव के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और बम्हौरी कलां गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम बम्हौरी कलां में एक कम्पोजिट विद्यालय संचालित है जिसके प्रधानाध्यापक का नाम प्रमोद कुमार है तथा विद्यालय में 1–5 तक कुल नामांकन संख्या– 251 एवं 6–8 तक कुल नामांकन– 220 है। विद्यालय पूर्ण रूप से नल संयोजन से संतृप्त हैं जिसके कारण बच्चों को नियमित रूप से पेयजल की आपूर्ति विद्यालय में होती है। बम्हौरी कलां गांव में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी संचालिका का नाम श्रीमती रूप रेखा एवं ऊमा देवी है। आंगनबाड़ी केन्द्र में कुल 105 बच्चें एवं 16 धात्री माताऐं पंजीकृत हैं। केन्द्र संचालिका से बच्चों एवं माताओं के पोषाहार एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम पंचायत में एक स्वास्थ्य केन्द्र भी अवस्थित है जिसकी ए.एन.एम. का नाम समता जैन है। ए.एन.एम. समता जैन को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् बम्हौरी ग्राम पंचायत में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा किया गया।

ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां की कुल आबादी–3900 है एवं मतदाताओं की संख्या–2300 है। गांव में कुल नल कनेक्शनों की संख्या– 360 हैं जबकि कुल आवश्यकता 452 है। बचे हुये परिवारों को भी नल संयोजन से आच्छादित करने का प्रयास किया जा रहा है। गांव के अधिकांश लोगों ने नल कनेक्शन इसलिए नहीं लिया क्योंकि उनके घर में पहले से ही नल की उपलब्धता थी। बम्हौरी कलां में लोधी जाति जो कि अन्य पिछड़ा वर्ग के अंतर्गत आते हैं, बहुसंख्यक हैं। इसके अतिरिक्त गांव में अनुसूचित जाति के लोग निवासित हैं। नल संयोजन से संतृप्त परिवारों को नियमित स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। बचे हुये परिवाारों को भी नल संयोजन से संतृप्त करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि उन्हें भी शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

नोट :– *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषयानुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां की कुल जनसंख्या लगभग 3900 है। स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चयन बम्हौरी कलां ग्राम पंचायत से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 3900/10 = 390 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50 : 50 प्रतिशत)

में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव के संदर्भ में चर्चा की गयी। ग्राम बम्हौरी कलां में संचालित कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव से शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलावों को समझने का प्रयत्न किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों का आकलन किया गया। बम्हौरी कलां गांव में संचालित आंगनबाड़ी एवं स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मियों को भी हितग्राहियों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है।

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 390 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 195 पुरूष और 195 महिलायें हैं। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया है कि कोई भी ऐसी इकाई चयनित ना हो, जो नल संयोजन से वंचित हो। इसके अतिरिक्त गांव कि हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को भी अध्ययन में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयत्न किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु बम्हौरी कलां ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (390 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में बम्हौरी कलां ग्राम से संबंध ना रखने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उन्हें भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित होने से वंचित किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम बम्हौरी कलां, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का निष्पक्षता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 195 महिलाओं से ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के संचालन के पश्चात् महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने का

प्रयत्न किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित 98 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारी में कमी आयी है, धन की बचत हुयी है, समय की बचत हुई है तथा स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि वह समय बचत होने से बच्चों की शिक्षा पर पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दे पा रही हैं। बच्चों को समय से तैयार करके विद्यालय भेज रही हैं। 97 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि जल संकट से उत्पन्न

तनाव में अब कमी आयी है। ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां के हितधारकों से हुई परिचर्चा से पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में सुधार आया है और वह सशक्त हुयी हैं, हितधारकों ने बताया कि महिलाओं की सोच में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है। महिलाओं में आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन से प्रकट तथ्य इस ओर इंगित करते हैं कि बम्हौरी कलां गांव में महिलायें सशक्त एवं स्वावलंबी हुई हैं, वह स्वयं एवं परिवार के संदर्भ में निर्णय लेने में सक्षम हुयी हैं, परिवार में उनकी भूमिका को स्वीकार किया जा रहा है। कार्य बल में भागीदारी बढ़ने से परिवार में उन्हें सम्मान प्राप्त हुआ है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के समाधान के साथ ही महिलाओं की प्रस्थिति में भी बदलाव किया है। योजना ने पुरूषवादी सोच के स्थान पर नारीवादी मूल्यों को प्राख्यापित किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने शिक्षा के क्षेत्र में भी नवीन आयाम स्थापित करके बदलाव को संबोधित किया है। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। बच्चों के समय की बचत होने एवं शारीरिक तथा मानसिक स्तर में आने वाले सुधार ने बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित किया है। ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां में संचालित कम्पोजिट विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित किया जा चुका है जिससे बच्चों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। परिणामस्वरूप

बच्चों के नामांकन में वृद्धि हुई है क्योंकि अब बच्चों को विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं तक पहुंच सुलभ हो गयी है। विद्यालय के शिक्षकों से हुई परिचर्चा के अनुसार ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना से बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है, स्वच्छता में वृद्धि हुई है जिससे बच्चे साफ–सुथरे कपड़े पहनकर विद्यालय आ रहे हैं, परिणामस्वरूप बच्चों में शिक्षा के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि विद्यालय में शौचालय की सुविधा उपलब्ध होने से बच्चियों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों से प्राप्त आकड़ों के अनुसार परिवार में भी बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। बीमारियों पर लगने वाला धन अब बच्चों की शिक्षा–दीक्षा पर लगाया जा रहा है। इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि ''हर

घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही सतत विकास लक्ष्य–4 को भी प्राप्त करने में उत्साहजनक कार्य किया है। ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां के लोगों में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों के प्रति संतुष्टि एवं खुशहाली का माहौल है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

स्वच्छ जल की प्राप्ति के अभाव में उत्तम स्वास्थ्य की कल्पना नहीं किया जा सकता है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के समाधान के साथ ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता को भी सुनिश्चित किया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि योजना संचालित होने के बाद से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है और उनकी कार्यात्मक क्षमता में भी वृद्धि हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों के अनुसार दूषित जल पीने के कारण पेट संबंधी बीमारियां अधिक होती थी जिससे कारण वह प्रायः बीमार रहते थे। 95 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि दूषित जल पीने के कारण माह में लगभग 12–14 दिन वह पेट दर्द एवं अन्य बीमारियों से ही ग्रसित रहती थी, फिर भी घर के समस्त कार्यों को दर्द सहन करते हुये करना पड़ता था। चूंकि अब ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित कर दी है, इसलिए उक्त समस्या से मुक्ति मिल गयी है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में अधिक सुधार देखा गया है। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि पहले पानी भरकर रख देने से उसका रंग बदल जाता था जिससे वह पीने लायक नहीं रहता था। अब स्वच्छ जल उपलब्ध होने से पेयजल की कोई भी समस्या

नहीं है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि दूषित पेयजल से दांत का रंग भी खराब हो

जाता था जिसके कारण दांत की सुंदरता में कमी और दांत कमजोर हो जाता था। अब इस समस्या से निजात मिल गया है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बीमारियों में कमी आने से धन एवं समय की बचत हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि योजना संचालन के पूर्व में पेचिस, दस्त, उल्टी एवं पीलिया जैसी समस्यायें प्रमुखता से देखी जाती थी। इस प्रकार उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के मूल्यांकन से पता चलता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बम्हौरी कलां गांव की जनता के स्वास्थ्य में व्यापक स्तर पर सुधार को प्रोत्साहित किया है। स्वास्थ्य स्तर में आये बदलाव से लोगों में संतोष का भाव देखा जा सकता है। यह योजना अपने बहु–आयामी लक्ष्यों

को प्राप्त करने की ओर उन्मुख है जिसका उदाहरण बम्हौरी कलां से प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से मिलता है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

ग्राम पंचायत बम्हौरी कलां के 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि उनका गांव पूर्ण रूप से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत लोगों ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व में गांव के समृद्ध लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की पहुंच थी, निम्न आय एवं वंचित वर्गों तक शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं था, उन्हें कुओं एवं तालाबों से जल संचय करना पड़ता था, जो कि दूषित होता था। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से उक्त समस्या का समाधान हुआ है। 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि योजना संचालित होने के बाद से सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आया है, लोगों की सोच बदली है, गांव में एकता की भावना का विकास हुआ है। जल जनित सामाजिक तनाव में कमी आयी है। इस प्रकार से ग्राम बम्हौरी कलां के लोगों में समग्र परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है।

न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत लोगों ने कहा कि जीवन–स्तर में बदलाव आने से शादी–विवाह जैसे मूल्यों में भी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इलाज पर खर्च होने वाले धन की बचत से शादी–विवाह में लोगों द्वारा अधिक खर्च किया जा रहा है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बाल विवाह में कमी आयी है। स्वास्थ्य स्तर में आये

बदलाव ने गांव के लोगों की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन किया है। जिससे उनका रहन–सहन का स्तर उच्च हुआ है।

4.5 रोजगार के अवसर

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि गांव के रोजगार का मुख्य साधन कृषि एवं संबंधित गतिविधियां हैं। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के नये अवसर प्रदान किये हैं क्योंकि अब उनका स्वास्थ्य स्तर तो बेहतर है ही, साथ ही इलाज पर खर्च होने वाला पैसा भी बच रहा है जिसका उपयोग वह उद्यम शुरू करने के लिए लगने वाली आवश्यक पूंजी पर कर रहे हैं। 98 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने कृषि एवं पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाया है। गांव के कुछ युवा जीवकोपार्जन हेतु बाहर महानगरों जैसे– दिल्ली, मुंबई, सूरत आदि गये हैं और कुछ युवा गांव में ही स्वरोजगार कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने युवाओं को गांव से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया है क्योंकि जल संकट के समाधान ने युवाओं के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाया है जिससे उनकी कार्यात्मक क्षमता में वृद्धि हुई है और उन्हें मूलभूत सुविधायें गांव में ही प्राप्त हो रही हैं। युवा लोगों का झुकाव मत्स्य पालन, कृषि, पशुपालन, डेयरी, कुक्कुट पालन एवं गांव व आस–पास में उपलब्ध अन्य व्यवसायों के प्रति बढ़ा है।

सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिस लक्ष्य को लेकर संचालित की जा रही है, उसकी प्राप्ति की पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े करते है। ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा ग्राम बम्हौरी कलां, विकास खण्ड मड़ावरा, जनपद ललितपुर में अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय बदलाव आये हैं। विकास के समग्र पक्षों को संबोधित यह योजना जल संकट का समाधान करने के साथ ही बहु–आयामी बदलावों को सुनिश्चित करने में महती भूमिका का निर्वहन किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को उन्नत करके यह योजना समाज में सकारात्मक संदेश को प्रेषित कर रही है। बम्हौरी कलां की जनता ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति संतुष्टि का भाव रखती है और विकास के समग्र पक्ष पर बदलाव को महसूस कर रही है।

ग्राम पंचायत कचनौदा, विकास खण्ड बिरधा, जनपद ललितपुर

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव से ग्राम कचनौदा, विकास खण्ड बिरधा, जनपद ललितपुर के निवासियों के जीवन–स्तर में आये बदवालों का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली जैसी विधियों का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण,

परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में

जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री बब्लू कुशवाहा से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी पंचायत सदस्यों से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन आदि जानकारी प्राप्त की गई। गांव में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक जूनियर हाई–स्कूल संचालित हैं। दोनों विद्यालयों में छात्र/छात्राओं का नामांकन क्रमशः 145 एवं 262 पाया गया तथा जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की प्राप्ति समुचित मात्रा में पायी गई। प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका का नाम श्रीमती रजनी नामदेव है। जूनियर हाई–स्कूल में प्राधानाध्यपक के अतिरिक्त 04 सहायक अध्यापक एवं 02 अनुदेशक नियुक्त हैं। कचनौदा ग्राम पंचायत में कुल 03 आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिनकी कार्यकत्रियों के नाम मंजू पाठक, ममता पाठक एवं सुधा पाठक है। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम कचनौदा में स्थापित स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. से बात कर स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की गयी जिसमें उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं को पर्याप्त पाया गया।

कचनौदा ग्राम पंचायत की कुल आबादी 5000 है एवं मतदाताओं की संख्या–3300 है। पंचायत में कुल घरों की संख्या–900 है जबकि इसके सापेक्ष नल संयोजनों की संख्या केवल 670 है। गांव में बहुसंख्यक आबादी अनुसूचित जाति के लोगों की है, उसके बाद सामान्य और अनुसूचित जनजाति की आबादी है। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि

है, यद्यपि कि गांव की केवल 50 प्रतिशत ही भूमि उपजाऊ है और शेष भूमि पहाड़ी व पथरीली है। गांव के अधिकतर लोग बाहर जीवकोपार्जन हेतु पलायन कर गये हैं। गांव में एक महिला स्वयं सहायता समूह भी संचालित है। कचनौदा पंचायत में सभी परिवार नल संयोजन से आच्छादित नहीं है, यद्यपि कि जो भी परिवार नल संयोजन से आच्छादित हैं, उनमें नियमित शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित हो रही है।

नोट : अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

1.0 निदर्श निर्धारण

कचनौदा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–5000 है, जिसमें अनुसचित जाति एवं जनजाति तथा सामान्य जाति के लोगों का प्रतिनिधित्व है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम कचनौदा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (5000/10 = 500)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 500 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि कचनौदा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम कचनौदा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी। निदर्श निर्धारण में यह ध्यान रखा गया है कि किसी–भी ऐसी इकाई का चयन निदर्श रूप मे ंना हो, जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत पेयजल की आपूर्ति से वंचित हो।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत कचनौदा विकास खण्ड विरधा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम सभा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम पंचायत के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम कचनौदा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम अग्रलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 500 न्यादर्श सम्मिलित किये गये हैं जिनमें से महिलाओं की संख्या–250 है। न्यादर्श में सम्मिलित महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् की स्थितियों के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि 100 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार महिलाओं के समग्र विकास में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वर्णित योजना ने अनेक प्रकार की बीमारियों से उन्हें सुरक्षा प्रदान की है, विशेषकर पेट संबंधी और जल–जनित बीमारियों से। महिलाओं ने

बताया कि उनके शारीरिक और मानसिक स्तर में सुधार आया है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि योजना संचालित होने के पूर्व में पानी लाने के लिए दूर जाना पड़ता था जिसके कारण उन्हें गर्दन में दर्द जैसी समस्यायें होती थी। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना आने के बाद से यह समस्या समाप्त हो गयी है। परिवार को अधिक समय देने

के कारण महिलाओं का सम्मान बढ़ा है। समय व धन की बचत के कारण महिलायें घरेलू व्यवसायों में हाथ बटा रही हैं। पशुपालन और दुग्ध उत्पादन में महिलाओं का योगदान बढ़ा है। बच्चों की शिक्षा पर भी अब वह पूर्व की अपेक्षा अधिक समय दे रही हैं। उक्त योजना ने महिलाओं को सशक्त करके स्वावलंबी बनाने में सहायता की है। महिलाओं

की बीमारियों के इलाज पर होने वाला खर्च अब बच रहा है जिसका उपयोग वह छोटे–मोटे धंधों में कर रही हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार किया है जिससे उनके अंदर आत्मनिर्भरता आयी है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम पंचायत कचनौदा में न्यादर्श में सम्मिलित लोगों से चर्चा करने पर पता चला कि योजना के संचालन से ग्राम कचनौदा के समग्र शिक्षा में प्रगति हुई है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार पंचायत में स्थापित विद्यालयों के शैक्षिक परिवेश में सुधार आया है।

उक्त विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं जिसके कारण छात्र/छात्राओं के नामांकन दर एवं उपस्थिति में वृद्धि हुई है। महिलायें अपने बच्चों को नियमित रूप से समय पर विद्यालय भेज रही हैं। अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता

आयी है। बच्चों के मानसिक स्तर में सुधार आने से शैक्षिक गतिविधियों में मन अधिक लग रहा है। विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के निवारण के साथ ही शैक्षिक एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में भी सकारात्मक परिवर्तन को दिग्दर्शित किया है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार आया है। गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि वर्णित योजना ने ग्राम पंचायत कचनौदा में जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी गतिशीलता लायी है। गांव के लोग योजना द्वारा कृत कार्यों और उससे आये बदलावों के प्रति संतुष्ट हैं।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 500 लोगों एवं हितधारकों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के स्वास्थ्य में वृहद स्तर पर सुधारात्मक परिवर्तन किया है। पेट संबंधी बीमारियां कम हुई हैं, पेचिस और बच्चों के पेट में कीड़ों जैसी समस्याओं से निजात मिला है। महिलाओं में बीमारियां कम होने से उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार आया है। 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि इलाज हेतु कर्ज लेने की समस्या से निजात मिला है जिससे गरीबी में भी कमी आयी है। स्वास्थ्य में सुधार होने से गांव के लोग अपने कार्यों में अधिक समय दे पा रहे हैं। 91 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि दूषित जल पीने के कारण हड्डियां कमजोर हो जाती थी जिसके कारण शरीर में कमजोरी और विकलांगता की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। इस समस्या का शमन ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा प्राप्त शुद्ध पेयजल से

हुआ है। लोगों ने बताया कि अब गांव के लोगों में बीमारियां बहुत कम हो रही हैं जिसके

कारण इलाज पर खर्च में कमी आयी है। इस प्रकार समग्र मूल्यांकन से इंगित होता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम पंचायत कचनौदा के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार करके उनकी कार्यात्मक क्षमता में सुधार किया है और उन्हें गरिमापूर्ण जीवन जीने के अवसर प्रदान करते हुए खुशहाल बनाया है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

ग्राम कचनौदा ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्ण रूप से आच्छादित है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व गांव के केवल समृद्ध और उच्च जाति के लोगों तक ही शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच थी, निम्न जाति एवं कम आय वर्ग के लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित थे। इस समस्या का समाधान ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद हुआ है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में कई बार जल संचयन को लेकर लड़ाई–झगड़े भी हो जाते थे जिसके कारण गांव में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। इस समस्या का समाधान भी वर्णित योजना ने किया है। अब सभी परिवार शुद्ध पेयजल से आच्छादित हो गये हैं। जल संकट के कारण होने वाले झगड़ों पर अब विराम लग गया है। गांव के लोगों में सहकार की भावना आयी है और सामाजिक भेद–भाव भी कम हुआ है। जल के लिए टैंकर के पीछे लगने वाली लंबी लाइनों से मुक्ति मिली है। सामाजिक अन्तःक्रिया स्थापित होने से गांव में स्वस्थ माहौल बना है। वैवाहिक कार्यक्रमों में जल संकट की समस्या समाप्त हो गयी है। योजनांतर्गत प्राप्त शुद्ध पेयजल के कारण गांव के छवि में सुधार आया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक मूल्यों और परम्पराओं में बदलाव किया है जिसके सकारात्मक परिणाम ग्राम पंचायत कचनौदा में देखने को मिल रहे हैं।

4.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। महिलाओं के पास समय की बचत होने से वह उत्पादक गतिविधियों में स्वयं को संलग्न कर आय अर्जन कर रही हैं। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अभिमत में हस्त–शिल्प जैसे कार्यों में महिलाओं का रूझान देखा गया है। गांव के अधिकांश युवा और प्रौढ़ लोग जीवकोपार्जन हेतु शहरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग स्वरोजगार एवं कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

आने के बाद से युवाओं के पलायन में कमी आयी हैं क्योंकि अधिकतर युवा गांव में मूलभूत सुविधाओं के ना मिलने के कारण शहरों में चले जाते थे और वहीं पर छोटे–मोटे रोजगार में स्वयं को संलग्न करके जीवन निर्वाह किया करते थे। उक्त योजना ने युवाओं को गांव में रहकर रोजगार के विकल्प तलाशने को प्रेरित किया है। युवाओं के स्वास्थ्य स्तर में स्वच्छ पेयजल पीने से सुधार आया है जिसके कारण उनका कार्य प्रदर्शन भी पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। युवाओं में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ है। उनमें आत्मनिर्भर होकर आगे बढ़ने की लालसा ने जन्म लिया है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने आर्थिक क्षेत्र में सुधार लाकर गांव के लोगों के जीवन स्तर को उच्च किया है।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन करने से प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उस उद्देश्य को ललितपुर जनपद के बिरधा विकास खण्ड के ग्राम कचनौदा का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है एवं ग्राम पंचायत कचनौदा के लोग ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत कृत कार्य से पूर्णतयः संतुष्ट हैं और खुशहालपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। गांव की जनता अपने समग्र व सतत् विकास से प्रसन्न है। योजना द्वारा लाये गये परिवर्तनकारी बदलावों से लोगों में खुशहाली का माहौल है एवं वह स्वयं को खुशकिस्मत महसूस कर रहे है।

ग्राम पंचायत गुगरवारा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के परिणामस्वरूप ग्राम पंचायत गुगरवारा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर में निवासित लोगों के जीवन स्तर में आये समग्र बदलावों को जानने के लिए यह अध्ययन

संपन्न किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली पर आधारित है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव का आकलन करने के लिए

सर्वप्रथम ग्राम पंचायत गुगरवारा की जनांकिकी और सामाजिक–आर्थिक स्थिति संबंधी आंकड़ों को एकत्र किया गया। उक्त हेतु सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, परिवारों की संख्या, गांव में निवासित जातियां, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती द्रौपदी देवी से गांव के संदर्भ में परिचर्चा करके आवश्यक जानकारी प्राप्त की गयी। तत्पश्चात् पंचायत सदस्यों से बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं और उपलब्धियों के संदर्भ में चर्चा किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम में स्थित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय में कुल 224 विद्यार्थी नामांकित हैं जिसमें बालकों की संख्या–104 एवं बालिकाओं की संख्या–117 है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कुल नामांकन–152 हैं जिनमें 81 बालिकायें एवं 71 बालक हैं। उक्त विद्यालय में कुल 5 शिक्षक सेवायोजित हैं जिनमें 03 सहायक अध्यापक पद पर तथा 02 अनुदेशक पद पर नियुक्त हैं। विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त है और शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। ग्राम पंचायत गुगरवारा में एक स्वास्थ्य केन्द्र एवं दो आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं।

गुगरवारा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–2400 है एवं मतदाताओं की संख्या–1600 है। गुगरवारा पंचायत में कुल 250 परिवार हैं, प्रत्येक परिवार को ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना से नियमित पेजजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम की अधिकांश आबादी अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की है तथा न्यूनतम आबादी सामान्य वर्ग के जातियों की है। रोजगार का मुख्य साधन कृषि है जिससे ग्राम की अधिकांश आबादी आय सृजन करती है। ग्राम पंचायत की लगभग 95 प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है। कचनौधा बांध के कारण पर्याप्त जल की उपलब्धता से भूमि उपजाऊ है जिसके कारण कृषि संभव हो पाता है। ग्राम में मूंगफली एवं मक्का का उत्पादन अधिक किया जाता है।

नोट : अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

1.0 निदर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन गुगरवारा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–2400 में से किया गया है। न्यादर्श चयन में ग्राम में निवासित सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्त्व प्रदान किया गया है। स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करके ग्राम पंचायत गुगरवारा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (2400/10 = 240)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 240 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि गुगरवारा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। अध्ययन में ग्राम पंचायत गुगरवारा के हितधारकों को भी सम्मिलित किया गया। न्यादर्श में किसी–भी ऐसी इकाई का चयन नहीं किया गया है, जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित नहीं है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत गुगरवारा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम पंचायत के सभी हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम गुगरवारा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम पंचायत गुगरवारा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के जीवन स्तर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 120 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिलाओं से वर्णित योजना के संचालित होने के पूर्व एवं पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा की गयी। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से उनकी अनेक प्रकार की स्वास्थ्य समस्यायें समाप्त हो गयी

हैं जिसके कारण उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि दूषित जल पीने की मजबूरी से उन्हें अब मुक्ति मिल गयी है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि अब उन्हें पूर्व की अपेक्षा अधिक समय प्राप्त होता है क्योंकि पूर्व में अधिकतर समय जल संचयन और दूषित जल पीने से होने वाली बीमारियों में ही चला जाता था, जिसके कारण उत्पादक कार्यों में उनकी

भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाती थी। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से वह पहले की अपेक्षा अच्छा महसूस कर रही हैं। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब वह बच्चों एवं परिवार की देख–भाल पर अधिक समय दे पा रही हैं। 90 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना से शौचालय में पर्याप्त जल उपलब्ध होने के कारण अब खुले में शौच जाने की मजबूरी समाप्त हो गयी है। इससे उनके सम्मान और स्वास्थ्य दोनों में सुधार आया है। महिलाओं ने स्वीकार किया कि परिवार में उनकी जिम्मेदारी बढ़ने से सम्मान में भी बढ़ोत्तरी हुयी है, साथ ही पारिवारिक तनाव में भी कमी आयी है। अतः ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं को समर्थ, आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाने में योगदान दिया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

गुगरवारा ग्राम पंचायत में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। दोनों विद्यालयों में 350 से अधिक बच्चे नामांकित

हैं। उक्त विद्यालयों को योजना से पूर्ण रूप से आच्छादित किया जा चुका है जिसके कारण शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति विद्यालय में हो रही है। पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता से विद्यालय में बने शौचालय भी स्वच्छ एवं कार्यात्मक हो गये हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ0 हेमंत तिवारी से परिचर्चा करने पर पता चला कि विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति दर्ज हो रही है और बच्चों में योजना लागू होने के बाद से स्वच्छता में भी वृद्धि हुयी है। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों से बात करने पर पता चला कि 100 प्रतिशत न्यादर्श इस बात से सहमत हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम गुगरवारा की साक्षरता दर में सुधार किया है और शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करके अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के प्रति सचेत होने के लिए प्रेरित किया है। योजना द्वारा जल संकट का समाधान करने एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धा सुनिश्चित करने से बीमारियों में कमी आयी आयी है जिसके कारण बच्चों का स्वास्थ्य स्तर सुधरा है, परणामस्वरूप उनकी शिक्षा में भी सुधार देखा जा सकता है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से बीमारियां कम हुयी हैं जिससे महिलाओं, पुरूषों, बच्चों, वृद्धों आदि सभी वर्गों के स्वास्थ्य स्थिति में परिवर्तनकारी सुधार परिलक्षित हुये हैं। पेचित, दस्त, पीलिया, जैसी जल जनित बीमारियां बहुत कम हो गयी हैं। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि इलाज पर होने वाले खर्च में बीमारी कम होने से कमी आयी है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि उनका शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। स्वास्थ्य

केन्द्र की ए.एन.एम. ने बताया कि विशेषकर बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य में योजना लागू होने के बाद से गुणात्मक सुधार आया है जिससे उनकी मानसिक स्थिति भी बेहतर हुयी है। पर्याप्त जल की उलब्धता से गांव में बने शौचालयों का नियमित उपयोग किया जा रहा है। पहले खुले में शौच करने से गांव में प्रवेश करने वाली सड़क पर दोनों किनारों पर मानव मल बिखरा रहता था, जिससे लोगों को आने–जाने में बहुत समस्या होती थी। शौचालयों के क्रियात्मक होने से महिलाओं के सम्मान और स्वच्छता में भी वृद्धि हुई है जिसके कारण बीमारियों पर अंकुश लगा है।

इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य स्तर में सुधार करने के साथ ही महिलाओं के सम्मान को भी संरक्षित किया है। योजना ने बीमारियों पर होने वाले अनावश्यक खर्च में कमी करके आर्थिक स्थिति में भी सुधार किया है। अतः यह सत्य है कि ग्राम गुगरवारा में योजना से प्राप्त परिणाम सुखद और ग्राम की जनता खुशहाल है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

गुगरवारा ग्राम पंचायत, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नियमित हो रही है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पूर्व गांव के केवल समृद्ध और उच्च जाति के लोगों तक ही शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच सुलभ थी। निम्न आय वर्ग एवं जाति के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं था। इस प्रकार गुगरवारा ग्राम में जल जनित भेदभाव देखा जा सकता था। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि

उक्त समस्या का पूर्ण समाधान ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने कर दिया है। योजना ने जल संकट से उत्पन्न लड़ाई–झगड़ों को समाप्त करके गुगरवारा ग्राम में शांति का माहौल उत्पन्न किया है और लोगों को सामंजस्यपूर्ण वातावरण में जीवन जीने का सुअवसर प्रदान किया है। गांव में सहयोग एवं सहकार की भावना विकसित करने में योजना का महत्त्वपूर्ण योगदान है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि योजना लागू

होने बाद जीवन स्तर एवं मूल्यों में आये परिवर्तन ने बाल–विवाह जैसी कुरीतियों पर भी अंकुश लगाया है, जिससे महिलाओं को सशक्त करने में सहायता मिली है। अतएव यह कहा जा सकता है कि वर्णित योजना ने ग्राम पंचायत गुगरवारा के लोगों के जीवन मूल्यों में बदलाव करके विकास के मार्ग को प्रशस्त किया है और जल संकट जनित समस्याओं

का समाधान भी प्रस्तुत किया है। इस प्रकार से गुगरवारा पंचायत में अपनत्त्व की भावना को निर्मित किया है।

4.5 रोजगार के अवसर

गुगरवारा ग्राम की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों से जीवकोपार्जन कर रही है। गांव के कुछ लोग बाहर शहरों में कमाने के लिए चले गये हैं। कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी आस–पास के गांवों में करते हैं। कुछ लोग आटो, ई–रिक्शा भी चलाकर जीवकोपार्जन कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से कृषि और पशुपालन जैसी गतिविधियों में सकारात्मक बदलाव देखा गया है। महिलाओं की भागीदार कृषि और संबद्ध गतिविधियों में बढ़ी है। युवाओं में जल संकट समाप्त होने से पलायन दर में कमी आयी है। 90 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि वह गांव में रहकर स्वरोजगार करेंगे जिसके अंतर्गत ठेला लगाना, आटो चलाना, मोबाइल रिपेयरिंग की दूकान, किराना की दूकान आदि सम्मिलित हैं। गांव के कुछ युवा कुक्कुट पालन के भी इच्छुक हैं। स्वच्छ पेयजल मिलने से स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से युवाओं की कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है जिसका उपयोग वह स्वरोजगार एवं कृषि जैसी गतिविधियों में कर रहे हैं। महिलायें हस्त–शिल्प जैसे कार्यों को करके धनार्जन कर रही हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित परिवारों में स्वास्थ्य स्तर उन्नत होने से शारीरिक सक्षमता में वृद्धि हुई है जिससे वह अपना अधिक समय उत्पादक कार्यों पर दे रहे हैं। इस प्रकार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने आर्थिक क्षेत्र में भी सुधार को प्रेरित किया है और लोगों के जीवन को खुशहाल बनाया है।

निष्कर्षतः प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि शासन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। गुगरवारा ग्राम पंचायत के अध्ययन से प्राप्त आंकड़ें ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभावकारी परिणाम को रेखांकित करते हैं। वर्णित योजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है एवं गुगरवारा ग्राम की जनता में खुशहाली का प्रतीक बनी है। समग्र परिवर्तन प्रेरित यह योजना गुगरवारा ग्राम पंचायत के सर्वांगीण विकास को पोषित कर रही है।

ग्राम पंचायत कल्याणपुरा, विकास खण्ड बिरधा, जनपद ललितपुर

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभावस्वरूप ग्राम कल्याणपुरा, विकास खण्ड बिरधा, जनपद ललितपुर के में निवासित आबादी के जीवन–स्तर में आये बदवालों का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली जैसी विधियों का प्रयोग

करते हुए अपेक्षित आंकड़ों को प्राप्त करके निष्कर्ष निकाले गये हैं। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री विरेन्द्र कुमार जैन से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम के पंचायत सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के

नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन आदि जानकारी प्राप्त की गई। गांव में एक प्राथमिक विद्यालय संचालित हैं जिसके प्रधानाध्यापक का नाम कैलाश सिंह राजपूत एवं विद्यालय में दो सहायक अध्यापक तथा दो शिक्षामित्र नियोजित हैं। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का कुल नामांकन–120 हैं जिसमें 60 बालक एवं 60 बालिकाएं हैं। विद्यालय में जल संयोजन एवं शुद्ध पेयजल की आपूर्ति समुचित मात्रा में पायी गई। कल्याणपुरा ग्राम पंचायत में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिनकी कार्यकत्रियों के नाम रानी पाठक, विमला तिवारी एवं राजकुमारी राजपूत है। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम कल्याणपुरा में कोई भी स्वास्थ्य केन्द्र उपलब्ध नहीं है।

कल्याणपुरा ग्राम पंचायत की कुल आबादी–9000 है एवं मतदाताओं की संख्या–5300 है। पंचायत में कुल परिवारों की संख्या–750 है जबकि इसके सापेक्ष नल संयोजनों की संख्या केवल 613 है। कल्याणपुरा ग्राम पंचायत के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। कुल कृषि योग्य भूमि 7800 एकड़ है जो कि ग्राम पंचायत की कुल भूमि का 80 प्रतिशत है। कल्याणपुरा पंचायत में सभी परिवार नल संयोजन से आच्छादित नहीं है। कुलाई मोहल्ला में अभी पाइप लाइन नहीं लगी है। लोगों ने बताया कि कई नल ठीक से काम नहीं कर रहे हैं एवं पाइप लाइन ठीक से नहीं लगी है जिसमें सुधार की आवश्यकता है।

नोट : अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

1.0 निदर्श निर्धारण

कल्याणपुरा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–9000 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम कल्याणपुरा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (9000/10 = 900)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 900 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि कल्याणपुरा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम कल्याणपुरा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी। निदर्श निर्धारण में यह ध्यान रखा गया है कि किसी–भी ऐसी इकाई का चयन निदर्श रूप में ना हो, जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत पेयजल की आपूर्ति से वंचित हो।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत कल्याणपुरा विकास खण्ड विरधा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम पंचायत के हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम कल्याणपुरा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम अग्रलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

अध्ययन में कुल 900 न्यादर्श सम्मिलित किये गये हैं जिनमें से महिलाओं की संख्या–450 है। न्यादर्श में सम्मिलित महिलाओं उत्तरदाताओं से ''हर घर नल–हर घर

जल'' योजना संचालित होने के बाद आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर 96

प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं के जीवन को सरल एवं प्रभावकारी बनाया है। कार्य बोझ कम होने से उनके जीवन में अनावश्यक तनाव कम हुआ है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पेट संबंधी बीमारी कम होने से धन की बचत हुई है। 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उनके स्वास्थ्य स्तर में पूर्व की अपेक्षा सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनके जीवन में समग्र बदलाव आया है। जल संकट का समाधान होने से कार्य बोझ कम होने के साथ ही समय व धन की बचत से स्वास्थ्य स्तर में उत्तरोत्तर सुधार आया है। बच्चों की शिक्षा पर पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान महिलायें दे रही हैं। 90 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि उत्पादक कार्यों से प्राप्त होने वाली आय के कारण परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं का समग्र विकास करके उनकी संतुष्टि एवं सशक्तिकरण में वृद्धि किया है। लैंगिक समानता को भी स्थापित करने में यह योजना उल्लेखनीय भूमिका निभाने का सामर्थ्य रखती है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

कल्याणपुरा ग्राम पंचायत में न्यादर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं से चर्चा करने पर पता चला कि योजना के संचालन से ग्राम कल्याणपुरा में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार परिलक्षित हुये हैं। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है और लोग शिक्षा के महत्त्व को समझ रहे हैं। ग्राम कल्याणपुरा में सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त

है जिससे विद्यालय में नियमित पेयजल की आपूर्ति हो रही है। प्रधानाध्यापक श्री कैलाश

सिंह राजपूत ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से बच्चों का झुकाव पूर्व की अपेक्षा शिक्षा के प्रति बढ़ा है, विद्यालय में नामांकन संख्या में भी सुधार हुआ है एवं बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में उन्नति हुई है। अभिभावक बच्चों की शैक्षिक आवश्कताओं को समझ रहे हैं। 95 प्रतिशत उत्तदाताओं ने कहा कि वह बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग हैं एवं अध्यापकों के संपर्क में रहकर बच्चों की शैक्षिक प्रगति से अवगत हो रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि योजना ने शिक्षा के क्षेत्र में रूपांतरकारी बदलावों को उल्लेखित किया है जिससे

साक्षरता दर में वृद्धि के साथ ही समझदार एवं जागरूक पीढ़ी गढ़ने में मदद मिल रही है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 900 लोगों में से 97 प्रतिशत ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारी में कमी आयी है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन से पता चला कि गांव के लोगों का स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा सुधरा है। हितधारकों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के स्वास्थ्य में रूपांतरकारी बदलाव प्रस्तुत किये हैं। पेट संबंधी बीमारियां कम हुई हैं। महिलाओं में बीमारियां कम होने से उनका स्वास्थ्य स्तर बेहतर हुआ है तथा उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि इलाज हेतु कर्ज जाल में फसने से मुक्ति मिल गयी है। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों के अनुसार अब डॉक्टर को उन्हें अनावश्यक पैसे देने की जरूरत नहीं है। जल संकट एवं दूषित पेयजल की समस्या से मुक्ति मिलने के कारण अनेक प्रकार के लाभ मिल रहे हैं।

इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि उक्त योजना ने बहु–आयामी प्रभाव लोगों के जीवन पर डाला है। बेहतर स्वास्थ्य की प्राप्ति से कल्याणपुरा ग्राम के लोगों में संतुष्टि का भाव परिलक्षित हो रहा है और उनमें योजना के समग्र प्रभाव के प्रति खुशहाली है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से ग्राम कल्याणपुरा पूर्ण रूप से संतृप्त नहीं है। कुछ मोहल्ले ऐसे हैं जिनमें अभी भी स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुलभ नहीं हुई है। फिर भी लगभग 80 प्रतिशत परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित हो चुके हैं। वर्णित योजना के संचालन से पूर्व गांव के कुछ समृद्ध और उच्च जाति के लोगों तक ही शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच थी। निम्न आय वर्ग एवं जाति के लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित थे। इस समस्या के समाधान में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की महत्वपूर्ण भूमिका है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि गांव में जल संकट के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़े कम हुये हैं। अब प्रत्येक परिवार में पेयजल की पहुंच हो गयी है जिसके कारण जल संकट के कारण उत्पन्न तनावों से मुक्ति मिल गयी है। 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि गांव के लोगों में सहकार एवं सहयोग तथा अपनेपन की भावना उत्पन्न हुयी है और सामाजिक भेद–भाव भी कम हुआ है। गांव में खुशहाली का माहौल बना है। लोग एक–दूसरे के काम आ रहे हैं। शादी–विवाह जैसे सामाजिक संस्कारों में परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। बाल विवाह में कमी आयी है जिससे पारिवारिक खुशहाली में वृद्धि हुई है। अतएव कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने कल्याणपुरा गांव का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है जिसमें सभी खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। योजना द्वारा सामाजिक गतिशीलता को प्राण वायु प्राप्त हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

कल्याणपुरा की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों एवं संबद्ध गतिविधियों से आय अर्जन कर रही है। कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी करके भी जीवन–यापन कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत आये बदलावों ने युवाओं को स्वारोजगार की ओर प्रेरित किया है। जल संकट समाप्त होने और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण युवाओं का मोह गांव के प्रति बढ़ा है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा अब अपने गांव में ही रहकर रोजगार को प्राथमिकता दे रहे हैं। 93 प्रतिशत के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने पलायन जैसी समस्या को काफी हद तक कम किया है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से महिलाओं के पास समय की बचत होने से वह उत्पादक गतिविधियों में स्वयं को संलग्न कर आय अर्जन कर रही हैं। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अभिमत में हस्त–शिल्प जैसे कार्यों में महिलायें अधिक रूचि ले रही हैं। अब गांव में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता से पलायन में विराम लगा है। युवाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनके कार्य प्रदर्शन में भी सुधार परिलक्षित हुआ है। यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार जैसे क्षेत्र में भी अवसर उपलब्ध कराने में भूमिका निभायी है।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन से प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' परियोजना के उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उस उद्देश्य को ललितपुर जनपद के बिरधा विकास खण्ड के ग्राम कल्याणपुरा का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं कि सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य

के अनुरूप कार्य कर रही है एवं ग्राम पंचायत कल्याणपुरा के लोग ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत कृत कार्य से पूर्णतयः संतुष्ट हैं और खुशहालपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिलाओं की प्रस्थिति में आये बदलावों ने ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की महत्ता को बढ़ा दिया है। योजना के प्रति कल्याणपुरा के रहवासी संतुष्ट हैं। महिलाओं में योजना के प्रति उत्साह देखा जा सकता है, वैसे तो सभी वर्गों के लोगों को योजना ने सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है लेकिन महिलायें सबसे ज्यादा इस योजना से प्रसन्न हैं।

ग्राम पंचायत गदयाना, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' का ग्राम पंचायत गदयाना, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर के लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है। योजना के प्रभाव

का आकलन करने के लिए सर्वप्रथम गांव की जनांकिकी और सामाजिक–आर्थिक स्थिति संबंधी आंकड़ों को एकत्र किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, गांव में निवासित जातियां, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में

सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री ओमकेश यादव से गांव की समग्र जानकारी प्राप्त करने हेतु चर्चा किया गया। इसके अतिरिक्त पंचायत सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में आंकड़ों का संग्रहण किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम में स्थित कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। कम्पोजिट विद्यालय में कक्षा 1–5 तक कुल 196 विद्यार्थी नामांकित हैं जिसमें बालकों की संख्या–95 एवं बालिकाओं की संख्या–101 है जबकि 6–8 तक कुल 169 विद्यार्थी नामांकित हैं जिसमें 86 बालक एवं 83 बालिकायें हैं। विद्यालय में जल संयोजन से शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। गदयाना ग्राम पंचायत में कुल 03 आंगनबाड़ी संचालित हैं जिनकी कार्यकत्रियों के नाम श्रीमती विमला जैन, श्रीमती ज्योति जैन एवं श्रीमती महेन्द्रा है। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम गदयाना में स्थापित स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मचारी बृजेन्द्र पाल से बात कर स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की गयी। गदयाना ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–8000 है एवं मतदाताओं की संख्या–3800 है तथा पंचायत में लगभग 300 घर कुशवाहा, 100 यादव, 100 अहिरवार, 50 ब्राह्मण, 10 सहरिया एवं लगभग 50 घर अन्य जातियों के लोगों के हैं। गदयाना में कुल लगभग 700 परिवारों में नल कनेक्शन के आवश्कता है जबकि इसके सापेक्ष केवल 636 परिवारों को ही नल संयोजन से संतृप्त किया गया है। गांव की 95 प्रतिशत जमीन खेती योग्य है। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है।

अधिकांश आबादी कृषि कार्यों से रोजगार प्राप्त करती है। ग्राम के कुछ परिवारों को छोड़कर सभी परिवारों को योजना से संतृप्त कर दिया गया है जिससे उन्हें नियमित शुद्ध पेयजल की प्राप्ति हो रही है।

नोट : अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।

1.0 निदर्श निर्धारण

न्यादर्श का चयन गदयाना ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–8000 से किया गया है। पंचायत में सभी वर्गों के लोग निवास करते हैं। न्यादर्श चयन में सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्त्व प्रदान किया गया है। स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करके ग्राम पंचायत गदयाना की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (8000/10 = 800)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 800 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि गदयाना ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। अध्ययन में ग्राम पंचायत गदयाना के हितधारकों को भी सम्मिलित किया गया। न्यादर्श में किसी–भी ऐसी इकाई का चयन नहीं किया गया है, जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित नहीं है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत गदयाना में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के

साथ ही ग्राम पंचायत के सभी हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम गदयाना से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम पंचायत गुगरवारा, विकास खण्ड बार, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के जीवन स्तर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम अधोलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

न्यादर्श में सम्मिलित कुल 400 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व एवं पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा की गयी। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उन्हें योजना संचालित होने के बाद से दूषित जल पीने से होने वाली बीमारियों से राहत मिली है जिससे स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। महिलाओं ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से वह पहले की अपेक्षा अच्छा महसूस कर रही हैं। स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मी बृजेन्द्र पाल ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से महिलाओं को बहुत लाभ हुआ है, ना केवल स्वाथ्य बेहतर हुआ है, अपितु समय व

धन बचत होने से उनकी सामाजिक प्रस्थिति भी बेहतर हुई है''। योजना संचालन के पूर्व महिलाओं को अपना अधिकांश समय जल संग्रहण पर देना पड़ता था जिससे अब मुक्ति मिल गयी है। प्रत्येक घर में जलापूर्ति होने से महिलाओं में खुशहाली आयी है। बच्चों की शिक्षा पर भी महिलाओं ने पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया है। ग्राम की महिलाओं ने बताया कि पहले जब वह रिश्तेदारों के यहां जाती थी, तो घर में बाल्टी एवं डिब्बों में जल एकत्रित करके जाना पड़ता था, ताकि परिवार के लोगों को जल एकत्रण संबंधी समस्याओं का सामना ना करना पड़े। समय व धन की बचत होने से महिलायें रोजगार की ओर उन्मुख हो रही हैं जिससे वह आय अर्जन भी कर रही हैं। आय अर्जन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है। जल संकट के कारण महिलाओं को होने वाले तनाव से पूर्णतः कमी आयी है। अतएव यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं को स्वावलंबी एवं सशक्त बनाने में योगदान दिया है। उनमें सकारात्मक परिवर्तन आया है। महिलाओं के प्रति सामाजिक धारणा में परिवर्तन आने से उनका समाज में सम्मान बढ़ा है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं को सुखद जीवन प्रदान करने में महती भूमिका का निर्वहन किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

शिक्षित व्यक्ति ही शिक्षित समाज का निर्माण करता है। यह तभी संभव है जबकि समाज में शिक्षा के प्रति चेतना जाग्रत होने के साथ ही शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया जाये। बेहतर शिक्षा की प्राप्ति बेहतर स्वास्थ्य और बेहतर स्वास्थ्य की प्राप्ति स्वच्छ

पेयजल की उपलब्धता से सुनिश्चित होता है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना उक्त लक्ष्यों को ही संबोधित है। ग्राम पंचायत गदयाना में एक कम्पोजिट विद्यालय है जिसमें

लगभग 350 बच्चों से अधिक का नामांकन है। न्यादर्श में सम्मिलित ग्राम पंचायत के लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व बच्चों का अधिकांश समय जल संग्रहण पर ही चला जाता था जिससे वह ना तो नियमित और ना ही समय से विद्यालय जा पाते थे। वर्णित योजना ने जल संकट का समाधान करने के साथ ही स्वास्थ्य स्तर को भी बेहतर किया है जिससे बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सकारात्मक परिवर्तन आया है। चर्चा करने पर पता चला कि योजना के संचालन से ग्राम गदयाना की शिक्षा में व्यापक स्तर पर सुधार आया है, लोगों में शिक्षा

के प्रति जागरूकता आयी है जिससे वह बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः आच्छादित है जिससे अध्ययनरत बच्चों को नियमित स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति हो रही है। विद्यालय में सुविधाओं के बढ़ने से बच्चों का नामांकन भी बढ़ा है, बच्चे विद्यालय में समय से नियमित रूप आ रहे हैं। लोगों ने बताया कि गांव की बच्चियां भी कम्पोजिट विद्यालय में नियमित पढ़ने जाती हैं जिससे महिलाओं की साक्षरता दर में भी सुधार आया है। योजना द्वारा विद्यार्थियों की बोध क्षमता में भी वृद्धि हुई है।

उक्त से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा के प्रति अभिभावकों एवं बच्चों में जागरूकता उत्पन्न हुई है। ग्राम पंचायत गदयाना में शिक्षा का उन्नयन हुआ है। अभिभावक शिक्षा का महत्त्व समझ रहे हैं और वह एक शिक्षित पीढ़ी तैयार करने की ओर तत्पर हैं।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

ग्राम पंचायत गदयाना के न्यादर्श एवं हितधारकों से हुई परिचर्चा के आधार पर जानकारी मिली कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ना केवल जल संकट को समाप्त किया है अपितु स्वास्थ्य में भी सुधार लाकर समग्र विकास को रेखांकित किया है। न्यादर्श में सम्मिलि 98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि जल–जनित बीमारियों से लोगों को मुक्ति मिल गयी है। जब से योजना का गांव में संचालन हो रहा है, बीमारियों के इलाज हेतु खर्च में कमी आयी है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के स्वास्थ्य स्तर को उच्च किया है। स्वच्छ जल पीने से अब पेट संबंधी बीमारियां तथा

पेचिस एवं दस्त जैसी समस्यायें कम हुई हैं। महिलाओं में बीमारियां कम होने से उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार आया है जिससे वह उत्पादक कार्यों में स्वयं को लगाकर अपनी

आर्थिक स्थिति में सुधार कर रही हैं। इलाज हेतु कर्ज लेने की समस्या से निजात मिलने

के कारण गरीबी के कुचक्र से मुक्ति मिली है। गांव के लोगों ने बताया कि दूषित जल पीने से शरीर में कमजोरी आ जाती थी जिसका शमन वर्णित योजना ने कर दिया है।

गौरतलब है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार को रेखांकित किया है, जिससे ग्राम पंचायत गदयाना के लोगों में शारीरिक एवं मानसिक सुदृढ़ता आयी है। लोगों में योजना से कृत कार्य के प्रति संतुष्टि का भाव है और वह योजना से प्राप्त परिणामों से बेहद खुश हैं।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

गदयाना ग्राम पंचायत में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से नियमित रूप

से जलापूर्ति हो रही है। योजना के संचालन से पूर्व गांव के केवल समृद्ध और उच्च

जाति के लोगों तक ही शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच सुलभ थी एवं निम्न जातियों तथा निर्धन लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं था। इस भेदभाव का शमन ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद हुआ है। योजना लागू होने के बाद जल संकट के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़ों में कमी आयी है। गांव में सामंजस्य का माहौल विकसित हुआ है तथा सामाजिक तनाव कम हुआ है। सहयोग की भावना विकसित होने से गांव में हम की भावना को संबल मिला है। स्वस्थ सामाजिक अंत–क्रिया से सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव आया है। शादी–विवाह संबंधी सोच में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। मूल्यों एवं प्रतिमानों के बदलने से बाल विवाह जैसी कुरीतियों में कमी आयी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम पंचायत गदयाना में सामाजिक गतिशीलता को पोषित किया है और गांव में तनाव मुक्त वातावरण को स्थापित किया है।

4.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से ग्राम पंचायत गदयाना में कृषि एवं पशुपालन में वृद्धि हुई है। महिलाओं के साथ ही युवाओं में भी कृषि एवं पशुपालन की ओर झुकाव देखा गया है। स्वास्थ्य स्तर बेहतर होने से युवाओं की कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है जिसका उपयोग वह स्वरोजगार एवं कृषि जैसी गतिविधियों में कर रहे हैं। जल संकट समाप्त होने से युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है। गांव के कुछ लोग रोजगार की चाहत में शहरों में पलायन कर गये हैं लेकिन अब ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद न्यादर्श में सम्मिलित युवाओं ने बताया

कि वह अपनी मातृभूमि से जुड़कर रहेंगे और यहीं पर रोजगार के विकल्प तलाशेंगे। युवाओं ने बताया कि शहरों में बहुत कम वेतन पर जीवन निर्वाह करना पड़ता है। वहां कार्य दशायें भी स्वास्थ्य के प्रतिकूल होती है जिसके कारण बहुत कठिनाई होती है। अब वह गांव में ही रहेंगे और उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होकर आय अर्जन करेंगे। गांव के कुछ लोग दूकान भी चलाते हैं। दूकान चलाने वाले न्यादर्शों ने बताया कि पहले बीमारी के कारण वह नियमिति दूकान पर नहीं जा पाते थे जिसके कारण ग्राहक टूट जाते थे और आय प्रभावित होती थी। महिलायें हस्त–शिल्प जैसे कार्यों को करके धनार्जन कर रही हैं। अब कुछ परिवारों को छोड़कर लगभग सभी परिवार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त हो गये हैं जिसके कारण उनका स्वास्थ्य स्तर बेहतर एवं समय बचत से अपने रोजगार पर अधिक समय दे पा रहे हैं।

अतः अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन से स्पष्ट है कि शासन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति ललितपुर जनपद के बार विकास खण्ड के ग्राम गदयाना का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। गदयाना में सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है। ग्राम पंचायत गदयाना के लोग ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत कृत कार्य से पूर्णतः खुश हैं। उक्त योजना ने ग्राम में समग्र परिवर्तन को पोषित करके विकास की एक नवीन धारा को प्रवाहित किया है, जिससे गांव के लोगों में उच्च स्तर का संतोष व्याप्त है। अति प्राचीन जल संकट के समाधान से लोगों में संतुष्टि का

भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। इस प्रकार शासन की मंशा के अनुरूप गदयाना पंचायत में परिणाम प्राप्त हुये हैं।

ग्राम पंचायत इकलगुवाँ, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर

ग्राम इकलगुवाँ, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' महत्त्वाकांक्षी योजना का लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिए अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत इकलगुवाँ गांव में निवासित

जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाता, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। गांव इकलगुवाँ के संदर्भ में समग्र

जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान राव सहाब यादव से चर्चा किया गया। इकलगुवाँ ग्राम की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित अन्य तथ्यों को प्राप्त करने के लिए हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और इकलगुवाँ गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। ग्राम इकलगुवाँ के पूर्व प्रधान कपूर सिंह से भी गांव में उपलब्ध भौतिक एवं अभौतिक संसाधनों तथा जनांकिकी के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु चर्चा किया गया। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम इकलगुवाँ में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित है जिसमें कुल नामांकन संख्या–70 (35 बालक एवं 35 बालिकायें) है। विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अभिषेक राजपूत से वार्ता किया गया। प्राप्त जानकारी एवं अवलोकन से पता चला कि विद्यालय में जल संयोजन से शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति हो रही है। विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं को समुचित मात्रा में पाया गया। अवलोकन एवं हितधारकों से हुई चर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी से स्पष्ट है कि इकलगुवाँ गांव की कुल भूमि 800 एकड़ है जिसमें से 250 एकड़ वन विभाग के अंतर्गत और शेष भूमि पथरीली/पहाड़ी है। इकलगुवाँ गांव की कुल आबादी–794 एवं कुल मतदाताओं की संख्या–570 है। गांव में बहुसंख्यक आबादी यादव जाति के लोगों की है और शेष लोग अनुसूचित जाति के हैं। न्यादर्श एवं हितधारकों से चर्चा पर पता चला कि इकलगुवाँ गांव में कुल नल संयोजन की संख्या–121 है। इकलगुवाँ गांव का प्रत्येक परिवार "हर घर

नल–हर घर जल'' परियोजना से आच्छादित है एवं गांव में प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से शुद्ध एवं पर्याप्त पेय जल की आपूर्ति हो रही है।

नोट :– *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषयानुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम इकलगुवाँ, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर की कुल आबादी लगभग 794 है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव इकलगुवाँ गांव से किया गया। प्रत्येक जातीय प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 794/10 = 80 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में इकलगुवाँ के प्रधान, पूर्व प्रधान एवं अन्य पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर चर्चा की गई। ग्राम इकलगुवाँ में शासन द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया और योजना के प्रभाव से गांव में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालय में

नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। इकलगुवाँ गांव में आंगनबाड़ी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के अभाव के कारण उन्हें हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन में कुल 80 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 40 पुरूष और 40 महिलायें हैं। इसके अतिरिक्त गांव कि हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को भी अध्ययन में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम इकलगुवाँ विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु इकलगुवाँ ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (80 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में इकलगुवाँ ग्राम से इतर व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उसे भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित होने से वंचित किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम इकलगुंवा, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का वस्तुनिष्ठ, विषयनिष्ठ तथा तथ्यात्मक एवं पक्षपात रहित अध्ययन किया गया है। जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम निम्नलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में :

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिए कुल न्यादर्शों से 40 (50 प्रतिशत) महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श में सम्मिलित महिलायें इकलगुवाँ गांव की महिलाओं का बेहतर प्रतिनिधित्त्व करती हैं, क्योंकि यह महिलायें सभी आयु, जाति और वर्ग से संबंधित हैं। न्यादर्श रूप में सम्मिलित महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व और पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में वार्ता करने पर 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वर्णित योजना ने उनके जीवन को सरल बनाया है, कठिनाइयों को कम किया है और उन्हें परिवार एवं समाज में सम्मानजनक जीवन प्रदान किया है। 100

प्रतिशत महिलाओं ने ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव से पेट संबंधी बीमारी कम होने के प्रति सहमति प्रकट की है। ग्राम प्रधान के अनुसार– ''इकलगुवाँ के प्रत्येक

परिवार को शासन द्वारा शौचालय की सुविधा दी जा चुकी है और नल संयोजन होने से प्रत्येक शौचालय में पर्याप्त पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है, जिसके कारण महिलाओं

को शौच हेतु बाहर नहीं जाना पड़ता है, जो उनके सम्मान को उन्नत और बीमारियों से मुक्ति की दिशा में बेहतर प्रयास है। साथ ही प्रधान जी ने बताया कि अब गांव की कोई भी महिला शौच हेतु बाहर नहीं जाती है। जन–भागीदारी से गांव को खुले में शौच से मुक्त किया जा चुका है''। अवलोकन से यह पता चलता है कि महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है, उनकी शारीरिक और मानसिक क्षमता में वृद्धि हुई है। समय बचत होने से बच्चों की शिक्षा पर भी महिलायें अधिक ध्यान दे रही हैं। व्यावसायिक गतिविधियों में भी महिलायें उन्मुख और समय दे रही हैं। परिवार को समय देने से पारिवारिक तनाव में कमी आयी है। गौरतलब है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार करके उनके सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''जल जीवन मिशन'' योजना के अन्तर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने इकलगुवाँ गांव में शैक्षिक जागरूकता लाने में विशेष भूमिका निभायी है। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि योजना संचालित होने के उपरांत जल संकट के निवारण एवं शुद्ध पेयजल की समुचित पहुंच ने शिक्षा के प्रति नवीन दृष्टिकोण को जन्म दिया है। बच्चों तथा माता–पिता के शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य स्तर में सुधार ने शैक्षिक महत्ता को स्थापित किया है। प्राथमिक विद्यालय में नल संयोजन की उपलब्धता सुनिश्चित होने से मूलभूल सुविधाओं तक छात्र/छात्राओं की पहुंच सुलभ हो सकी है जिससे विद्यालय में नामांकन और नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई है। पर्याप्त जल की उपलब्धता

से प्राथमिक विद्यालय खुले में शौच मुक्त हो चुका है जिससे बालिकाओं की संख्या में बढ़ोत्तरी एवं नियमित उपस्थिति सुनिश्चित हुई है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि पूर्व

में बच्चों का अधिकांश समय जल संचयन में व्यतीत होता था और शुद्ध पेयजल के अभाव के कारण वह प्रायः बीमार रहते थे जिसके कारण बच्चे नियमित विद्यालय नहीं आते थे।

न्यादर्श में सम्मिलित कुल 80 लोगों में से 94 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के पश्चात् बच्चों को विद्यालय नियमित रूप से भेजा जा रहा है क्योंकि अब विद्यालय मूलभूत सुविधाओं से आच्छादित हो चुका है जिससे बच्चे अब वहां रूक कर पूरे समय पढ़ाई भी कर रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अभिषेक राजपूत के अनुसार– ''अब बच्चों को बुलाने के लिए उनके घर पर जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि अभिभावक समय से बच्चों को विद्यालय में विद्यार्जन हेतु भेज रहे हैं''। प्रधानाध्यापक ने बताया कि गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। अध्ययनकर्ता द्वारा ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों का विशद विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने इकलगुंवा गांव में शिक्षा की ज्योति को प्रज्ज्वलित किया है जिससे लोगों में शिक्षा के प्रति व्यापक स्तर पर जागरूकता आयी है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

स्वास्थ्य के अभाव में खुशहाल जीवन के कल्पना करना नितांत बेईमानी होगी। यह वह स्तम्भ है जिसके सहारे कोई राष्ट्र पुष्पित, पल्लवित और विकसित होता है। यही कारण है कि सतत् विकास लक्ष्यों में भी स्वास्थ्य एवं आरोग्य को प्राथमिकता दी गयी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अभिमत में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट को समाप्त करने के साथ ही स्वास्थ्य को भी उन्नत करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित कुल 80 न्यादर्शों में से 100 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है और उन्हें जल–जनित बीमारियों से काफी हद तक मुक्ति मिली है तथा उन्हें डॉक्टर को अब बीमारियों के

इलाज हेतु व्यर्थ में धन देने की आवश्यकता नहीं है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि बंद पड़े शौचालय अब पर्याप्त जल की उपलब्धता से कार्यात्मक हो गये हैं

जिससे बीमारियों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब पेट संबंधी बीमारियों में बहुत कमी आयी है। लोगों ने बताया कि पहले बीमारियों का इलाज कराने

के लिए कई बार कर्ज लेने की मजबूरी होती थी, लेकिन अब बीमारियां कम होने से कर्ज लेने से काफी हद तक मुक्ति मिल गई है। एक स्थानीय डॉक्टर ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व गांव में उपलब्ध जल अत्यंत दूषित था, जिसमें आवश्यक खनिजों की मात्रा पर्याप्त नहीं थी। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से इकलगुंवा गांव के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है और उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमतायें भी उन्नत हुई हैं। योजना ने ग्रामीण जीवन को समृद्ध, कुशल एवं खुशहाल बनाया है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

90 प्रतिशत न्यादर्शों के मतानुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व शुद्ध पेयजल तक केवल धनवान और उच्च जाति के लोगों की ही पहुंच थी। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के लोगों को शुद्ध पेयजल नहीं उपलब्ध हो पाता था, क्योंकि वह शुद्ध पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन कर पाने में सक्षम नहीं थे। योजना ने इकलगुंवा के लोगों के सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण को परिवर्तित किया है, सहकारिता का भाव विकसित किया है, अपनेपन की भावना को प्रोत्साहित किया है तथा गांव की खुशहाली को उन्नत किया है। 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि उनके जीवन–शैली एवं मूल्यों में बदलाव आया है, जो कि अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में भी परिलक्षित हो रहा था। आर्थिक स्थिति में बदलाव आने से रहन–सहन का स्तर भी उच्च हुआ है। सामाजिक समारोहों एवं उत्सवों में खर्च में बढ़ोत्तरी इस बात को तस्दीक करता

है कि लोगों के समग्र जीवन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बदलाव लाया है जिससे सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम इकलगुवाँ की अधिकांश भूमि वन एवं शेष पठारी है, जिसके कारण कृषि योग्य भूमि की कमी गांव में है। यद्यपि कि कुछ लोग विपरीत परिस्थितियों में भी जमीन को समतल बनाकर कृषि कार्य कर रहे हैं और अपनी दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति हेतु थोड़ा–बहुत उत्पादन भी कर रहे हैं। रोजगार की चाह में पलायन की अधिकता गांव में पायी गयी। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से गांव में पलायन जैसी समस्या में कमी आयी है। जल संकट के समाधान से युवा लोग गांव में ही रहकर स्वरोजगार को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिसके कारण वह गांव से जुड़े हुये हैं। गांव में पिछड़ापन अधिक होने के कारण दिहाड़ी–मजदूरी जैसे कार्यों को करके भी जीवन–यापन लोगों द्वारा किया जा रहा हैं। 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वह अपने बचने वाले समय का उपयोग पशुपालन, डेयरी और सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में करके आय अर्जन कर रही हैं। शासन द्वारा संचालित मनरेगाा योजना के अंतर्गत भी लोग कार्य करने जाते हैं। कुल 98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बीमारी की समस्या से निजात, जल संकट की कमी, समय की बचत और स्वास्थ्य स्तर में सुधार होने से पलायन जैसी समस्या में कमी आयी है। शुद्ध पेयजल की आपूर्ति से गांव के युवाओं में उत्साह देखा जा सकता है, उनमें सकारात्मक धारणा का प्रसार हुआ है। पूर्व में जल संचयन पर ही पूरा समय व्यतीत हो जाता था जिससे महिलाओं के पास समयाभाव होने

के कारण अन्य कार्यों में उनका योगदान नगण्य हो जाता था, लेकिन अब गांव की महिलायें प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक कार्यों में संलग्न होकर अपनी भूमिका का निर्वहन और आय अर्जन कर रही हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने इकलगुंवा गांव में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध कराये हैं जिससे लोगों में आत्मविश्वास और गांव के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि वर्णित योजना ने गांव के लोगों में समद्धि को प्रोत्साहित किया है ओर रोजगार के अनेक विकल्प प्रस्तुत किये हैं।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने इकलगुंवा के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित किया है। वर्णित योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल रही है। जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना को संचालित किया जा रहा है उसकी प्राप्ति इकलगुंवा गांव में हुई है। महिलाओं के जीवन स्तर में पूर्व की अपेक्षा सुधार हुआ है, बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिला है, युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त हुये हैं। अतएव यह कथनोक्ति उचित होगी कि शासन द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा इकलगुवाँ गांव में सामाजिक, आर्थिक गतिशीलता आयी है और लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है और वह सुखद जीवन जी रहे हैं। योजना ने महिलाओं को सशक्त करने में भी अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है जिससे महिलाओं की स्थिति भी उच्च्व हुई है। यहां यह कहना समीचीन होगा कि उक्त योजना ने जल संकट के समाधान के साथ ही बहु–आयामी प्रभाव भी डाला है, जो इकलगुवाँ गांव को समग्र रूप से विकास के पथ पर अग्रसर

किया है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि यह योजना जल संकट के समाधान के साथ ही इकलगुवाँ ग्राम में सतत् विकास लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में भी प्रशंसनीय भूमिका का निर्वहन कर रही है।

ग्राम पंचायत थनवारा, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर

''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध व नियमित पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की संकल्पना के साथ संचालित किया गया था। योजना ने जल संकट के समाधान के साथ ही ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों को भी संबोधित किया है। गौरतलब है कि वर्णित योजना ने ग्रामीण जीवन स्तर में रूपांतरकारी बदलावों को प्रेरित किया है जिसका अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर यहां किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत ललितपुर जनपद के जखौरा विकास खण्ड के अंतर्गत

ग्राम थनवारा में ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना के प्रभाव को लोगों के जीवन स्तर पर देखा गया है। सर्वप्रथम

अध्ययन हेतु थनवारा गांव में की कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। गांव थनवारा के संदर्भ में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती कोमल देवी से चर्चा करके थनवारा ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित तथ्यों को प्राप्त किया गया। गांव के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और थनवारा गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम थनवारा में कुल 03 प्राथमिक विद्यालय, 02 जूनियर हाई–स्कूल और 01 हाई–स्कूल संचालित हो रहे हैं, जो कि थनवारा पंचायत के अलग–अलग गांवों में स्थित हैं। प्राथमिक विद्यालय थनवारा में कुल 105 विद्यार्थियों का नामांकन है जबकि प्रा0वि0 बालाजी में कुल नामांकन 76 और प्रा0वि0 रामगढ़ में 36 विद्यार्थी नामांकित हैं। जूनियर हाई–स्कूल में कुल 127 विद्यार्थियों को नामांकन है, जिसमें 41 बालक और 86 बालिकायें हैं। हाई–स्कूल के प्रधानाचार्य और इंचार्ज को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव से आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई। उक्त विद्यालयों में विद्यार्थियों के अनुपात में पर्याप्त शिक्षक हैं। प्रत्येक विद्यालय नल संयोजन से संतृप्त हैं जिससे नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित हो रही है। थनवारा ग्राम पंचायत में दो आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिसकी संचालिका का नाम शशि नायक एवं सरिता शर्मा है। आंगनबाड़ी

संचालिका से बच्चों एवं गर्भवती तथा स्तनपान कराने वाली माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार के संदर्भ में जानकारी एकत्र की गयी जो कि समुचित पाया गया। थनवारा गांव में एक स्वास्थ्य केन्द्र भी स्थित है।

थनवारा गांव की कुल आबादी 5200 है एवं मतदाताओं की कुल संख्या–3538 है। कुल परिवारों की संख्या–784 एवं नल संयोजन की संख्या 623 है। इसका अर्थ है कि थनवारा गांव में प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से संतृप्त नहीं किया गया है। थनवारा में कुशवाहा जाति के लोग बहुसंख्यक (लगभग 2000) हैं जबकि कुछ लोग अहिरवार और पंडित जाति से भी संबंधित हैं। गांव में निवासित लगभग 200 लोग अनुसूचित जनजातियों से भी संबंधित हैं। गांव की कुल 50 प्रतिशत जमीन ही उपजाऊ है, शेष पहाड़ी और पथरीली है। लगभग 80 प्रतिशत परिवारों को नियमित पेयजल की आपूर्ति हो रही है, शेष परिवारों को शीघ्र ही योजना से आच्छाादित करने की पहल की जा रही है, ताकि सभी परिवारों तक शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित किया जा सके।

नोट :– *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषयानुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम थनवारा की कुल आबादी लगभग 5200 है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव थनवारा गांव से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग

को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 5200/10 = 520 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में थनवारा के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर चर्चा की गई। ग्राम थनवारा में संचालित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को भी प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया और योजना के प्रभाव से गांव में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। थनवारा गांव में संचालित आंगनबाड़ी एवं स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मियों को भी हितग्राहियों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है।

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 520 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 260 पुरूष और 260 महिलायें हैं। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया है कि कोई भी ऐसी इकाई चयनित ना हो, जो नल संयोजन से अछूती हो। इसके अतिरिक्त गांव कि हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को भी अध्ययन में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम थनवारा विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु थनवारा ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (520 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में थनवारा ग्राम से इतर व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उन्हें भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित होने से वंचित किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम थनवारा, विकास खण्ड जखौरा, जनपद ललितपुर में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव का निष्पक्षता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम अग्रलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में महत्त्वाकांक्षी परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' का महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिए कुल न्यादर्शों से 260 (50 प्रतिशत) महिलाओं को सम्मिलित करके उनकी राय को जाना गया है। अध्ययन हेतु

न्यादर्श में सम्मिलित महिलायें थनवारा गांव की महिलाओं का पूर्ण प्रतिनिधित्त्व करती हैं। अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं से योजना के पूर्व और पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई। 97 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पेट संबंधी बीमारियां ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से कम हुई हैं। आंगनबाड़ी कार्यकत्री के अनुसार– ''महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से सुधार आया है, उनकी शारीरिक स्थिति उन्नत होने से कार्य प्रदर्शन में भी सुधार परिलक्षित हो

रहा है''। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के समय में बचत हुई है जिसका उपयोग वह बच्चों के पालन–पोषण और शिक्षा–दीक्षा पर तथा अन्य व्यावसायिक गतिविधियों और परिवार की देखभाल पर कर रही हैं। महिलाओं को सशक्त करने में उक्त योजना ने प्रमुख भूमिका निभायी है। महिलायें दुग्ध उत्पादन, सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में स्वयं को नियोजित करके आय अर्जन कर रही हैं। अवलोकन से स्पष्ट है कि महिलाओं की प्रस्थिति में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रूपांतरकारी बदलावों को प्रेरित करने उनके समग्र विकास को प्रोत्साहित तथा लैंगिक समानता को प्राप्त करने की दिशा में कार्य किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

वर्णित योजना ने शैक्षिक क्षेत्र को भी संबोधित किया है। शुद्ध पेयजल की सुलभ पहुंच ने लोगों को पर्याप्त समय मुहैया कराया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि पूर्व में जल संचयन पर अधिक समय लगता था, फिर भी शुद्ध जल प्राप्त नहीं होता था। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों के स्वास्थ्य में भी सुधार देखा गया है जिसके कारण वह अपनी शिक्षा पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं क्योंकि जल–जनित बीमारियों के कारण बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहता था जिससे वह ना तो नियमित विद्यालय जा पाते थे और ना ही पूर्ण मनोयोग से शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित कर पाते थे। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों और हितधारकों ने बताया कि पहले महिलाओं और बच्चों पर जल संचयन का सारा दारोमदार रहता था जिससे उनका अधिकांश समय जल संग्रह पर ही व्यतीत हो जाता था, इस

कारण वह ना तो नियमित विद्यालय जा पाते थे और ना ही घर पर पढ़ पाते थे। बीमारी के कारण कर्ज में डूबने से अभिभावक बच्चों की फीस और कापी–किताब की व्यवस्था

भी नहीं कर पाते थे क्योंकि गरीबी का दंश उन्हें मजबूर कर देता था। थनवारा ग्राम पंचायत में प्राथमिक से लेकर हाई–स्कूल तक की शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित हैं जो कि नल कनेक्शन से पूर्णतः आच्छादित हैं। मूलभूत सुविधाओं के उपलब्ध होने से बच्चों और अभिभावकों का झुकाव विद्यालय की ओर बढ़ा है। अभिभावक नियमित रूप से बच्चों को विद्यालय में पढ़ने के लिए भेज रहे हैं। अब उन्हें जल संचयन की चिंता नहीं है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि बच्चे जल संचयन जैसे कार्यों से मुक्त हो चुके हैं क्योंकि अब टोटी से प्रत्येक परिवार को जल उपलब्ध हो रहा है।

अध्ययनकर्ता द्वारा किये गये अवलोकन व सहभागी मूल्यांकन से स्पष्ट है कि गांव थनवारा में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर बदलाव आये हैं। न्यादर्शों से चर्चा करने पर स्पष्ट हुआ कि उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है और वह यह बात समझ गये हैं कि ''शिक्षा ही समग्र का आधार है''।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'' की संकल्पना जल से जुड़ा मुद्दा है। स्वच्छ जल के अभाव में इसकी संकल्पना कोरे कागज के समान है। संभवतः इन्हीं सकल्पनाओं को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने ''हर घर नल–हर घर जल'' जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना को संचालित करने का प्रण लिया और वर्ष 2019 में जल संकट के निवारण और बेहतर स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु वर्णित योजना को संचालित करने का निर्णय किया। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में विशेषकर वर्षा ऋतु में पेट संबंधी बीमारियां दूषित जल पीने से बढ़ जाती थी जिसके कारण इलाज पर व्यय बढ़ जाता था तथा निर्धनता के दंश में लोग फंस जाते थे। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से स्वास्थ्य संबंधी आदतों में बदलाव आया है। डायरिया, पेचित, दस्त जैसी बीमारियों से लोगों को निजात मिला है। पेट में ऐंठन की समस्या कम हुई है। महिलाओं ने बताया कि पहले माह में लगभग 10–12 दिन पेट दर्द होने की समस्या होती थी जो कि अब नहीं होती है। स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मचारियों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू

होने के पूर्व बच्चों के पेट में कीड़े पड़ जाने से तेज दर्द होता था जिससे अब मुक्ति मिल गई है। शौचालयों के संचालनात्मक होने से भी बीमारियों पर रोक लगी है।

गौरतलब है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य स्तर में सुधार करके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधारात्मक बदलाव को प्रेरित किया है तथा स्वास्थ्य क्षेत्र में रूपांतरकारी बदलाव को रेखांकित किया है। गांव के लोगों में स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं में कमी देखने को मिल रही है। इलाज हेतु कर्ज जाल में फंसने से बहुत हद तक थनवारा गांव के लोगों को मुक्ति मिली है।

4.4 सामाजिक व्यवहार मे बदलाव

कहते है कि जल प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है जिस पर सभी का अधिकार होता है, लेकिन यदि जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाये तो, यही जल व्यक्तिगत सम्पत्ति बन जाता है और कुछ गिने–चुने हाथों तक यह सिमट जाता है। इसकी एक बानगी ग्राम थनवारा में देखने को मिली, जहां पर कुछ लोगों को ही शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित थी, क्योंकि इस पर होने वाले खर्च को वहन करने का सामर्थ्य सभी लोगों में नहीं था। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि पूर्व में गांव में एक ही नल से कई लोगों द्वारा पीने हेतु जल प्राप्त किया जाता था, क्योंकि सभी नलों में पानी नहीं आता था। इसका कारण भूजल स्तर का अत्यधिक नीचे होना है। कई बार नल में पानी भरने को लेकर लड़ाई–झगड़े की नौबत भी आ जाती थी, अनेक बार लड़ाइयां भी हुई हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से यह समस्या अब समाप्त

हो चुकी है। अब सभी को अपने घर में ही स्वच्छ जल उपलब्ध हो रहा है। अब लड़ाई–झगड़े के स्थान पर सहकार का भाव विकसित हुआ है, शांति का माहौल कायम हुआ है, लोगों की सोच में परिवर्तन आया है। सांस्थानिक मूल्यों में बदलाव एवं आधुनिक मूल्यों के प्रचलन व आत्मसातीकरण ने लोगों के व्यवहार को परिवर्तित कर दिया है। शादी–विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में भी बदलाव परिलक्षित हो रहा है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गांव की छवि में सुधार आने से लोगों के जेहन में थनवारा गांव की सकारात्मक छवि निर्मित हुई है जिससे वह इस गांव में रिश्ते करना पसंद कर रहे हैं।

इस प्रकार से यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सामाजिक गतिशीलता को प्राण तत्त्व की प्राप्ति हुई है जो रूपांतरकारी बदलावों को समर्थन प्रदान करती है।

4.5 रोजगार के अवसर

रोजगार एक महत्त्वपूर्ण विषय है जिस पर चर्चा करना अनिवार्य है क्योंकि योजना के बहु–आयामी प्रभाव से रोजगार का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। ग्राम थनवारा में कृषि योग्य भूमि की कमी के कारण लोगों का रूझान स्वरोजगार और दिहाड़ी–मजदूरी की ओर अधिक है। कुछ लोग जीवन–यापन हेतु महानगरों की ओर पलायलन कर गये हैं जिसमें जल संकट की भूमिका को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से महिलाओं

का रूझान हस्त–शिल्प और पशुपालन की ओर बढ़ा है, जबकि युवाओं में पलायन दर में कमी आयी है। 92 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि अब मूलभूत सुविधाओं के मिलने से युवा लोग अपनी मातृभूमि से जुड़े रहना पसंद कर रहे हैं और आस–पास ही काम–धन्धें की तलाश कर रहे हैं। वर्णित योजना ने युवाओं को सशक्त बनाया है, उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। रोजगार के विकल्पों के बढ़ने से युवाओं में संतोष का भाव जाग्रत हुआ है। यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आर्थिक शून्यता को समाप्त करने व विकास के नये द्वार खोलने में मदद मिली है।

''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को ध्यान में रखकर संचालित की जा रही है उसके प्रतिपुष्टि प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम करते हैं। थनवारा गांव में रूपांतरकारी बदलाव देखने को प्रस्तुत सहभागी मूल्यांकन में मिला है। लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। जल संकट के निवारण के साथ ही योजना ने एक ही तीर से कई लक्ष्यों का संधान किया है। वह चाहे स्वास्थ्य हो, चाहे शिक्षा हो, महिला सशक्तिकरण अथवा सामाजिक जीवन एवं मूल्यों में आमूल–चूल परिवर्तन। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना अपने लक्ष्यों के अनुरूप कार्य कर रही है और लोगों के जीवन को सुखमय बना रही है।